श्री सुदर्शन संदेश

मई 2018

15/-

श्री सिद्धदाता आश्रम में ब्रह्मोत्सव

श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में ब्रह्मोत्सव का आयोजन बड़ी धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। पांच दिन चले इस आयोजन में दक्षिण से आए पुरोहितों ने पूजन किया और भगवान की विभिन्न विधियों से आराधना की। इस आयोजन में भगवान का नित्य पूजन हुआ। इसके अलावा कल्याण उत्सव, श्री रामानुज जयंती, श्री नृसिंह जयंती, श्री हनुमान जयंती का भी आयोजन किया गया। जिसमें परम पूज्य गुरूदेव श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज के साथ 2 केंद्रीय राज्यमंत्री श्रीकृष्णपाल गुर्जर जी, विधायक श्रीमति सीमा त्रिखा जी, 3– हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री श्री विपुल गोयल जी भी सम्मिलित हुए।

1

2

4

5

6

7

श्री सुदर्शन संदेश

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित

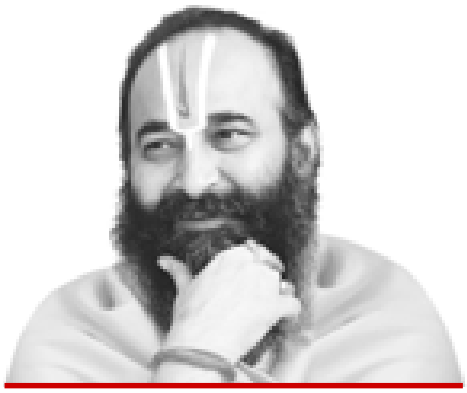

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज

प्रवचनांश

यदि आप अपनी जिम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी और योग्यता के साथ पूरा करते हो तो परमात्मा और गुरू भी अपने वचनों को अवश्य ही पूरा करेंगे। ऐसे तो नहीं चलेगा कि आप कुछ करें नहीं और परमात्मा व गुरू आपके कर्मों का बोझ लिए घूमते रहें। और फिर आपको भी तो ऐसे अच्छा नहीं लगेगा।

गुरुवाणी

शरणागत उसका नाम है कि दे दे तेरी इच्छा, न दे तो तेरी इच्छा, पर तू मेरा है। शरणागत के लिए एक ने कहा कि देखिए, भगवान राम तो वैभवशाली हैं और शिव जी ऐसे हैं, फलां ऐसे हैं, फलां ऐसे हैं।

महात्मा जी बोले, ठीक है, अच्छी बात है। हम तो उसकी शरणागत हैं। चाहे वह धनवान हैं, लक्ष्मीपति हों तो हमें क्या? वह बिल्कुल बदसूरत हों तो हमें क्या? हम तो शरणागत हैं। हमने तो एक रूप देखा है और वही हमारे मन में समाया हुआ है। सन्त ने कहा, भगवान चाहे लक्ष्मीपति हो, चाहे बैकुण्ठ को छोड़कर मृत्यु लोक में आकर वेंकटेश बन जायें, चाहे मांगने लगें, इससे हमें क्या लेना-देना। हमने तो एक बार उसके सामने शरणागति ले ली। अब तो वो जाने या उसका काम जाने। हम तो केवल एक उस परमेश्वर को ही जानें।-*श्रीगुरूमहाराज*

छायाचित्र

⏭ *श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम के अधिपति परमपूज्य श्री गुरूमहाराज अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज भगवान श्रीराम के उत्सव विग्रह का अभिषेक करते हुए।*

पत्रिका में अपने अनुभव व लेख संपादकीय कार्यालय को भेजें।

संपादकीय सलाहकार :
रामेश्वर सिंह, डी. सी. तंवर
संपादक : शकुन रघुवंशी (श्रीधर)*
एसोसिएट एडिटर : गीता 'चैतन्य'

संपादकीय पता: श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, सूरजकुण्ड रोड, सेक्टर-44, फरीदाबाद, हरियाणा फोन: 0129-2419555, 717

www.shrisidhdataashram.org
info@shrisidhdataashram.org

स्वत्वाधिकारी, जनहित मानव कल्याण केन्द्र के लिए प्रहलाद शर्मा ने मैसर्स मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794-95, गुरु रामदास नगर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092 से मुद्रित करवाकर ई-9, मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली-110091 से प्रकाशित किया। संपादक : शकुन रघुवंशी*

*अवैतनिक

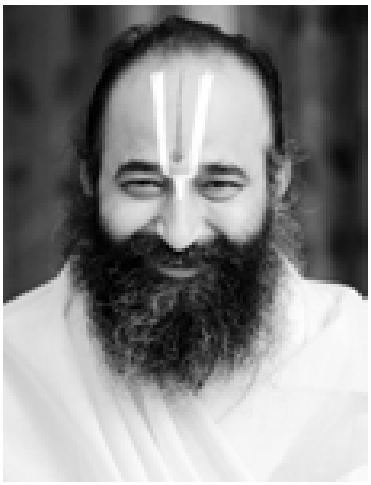

जो खुद अंधेरे में बैठा है, वो उजाला कैसे देगा!

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज, पीठाधिपति-श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

न वन्दनीयास्ते कष्टं दर्शनाद् भ्रान्तिकारकाः। वर्जयेत्तान गुरून् दूरे धीरानेव समाश्रयेत्।। 106।।
पाखण्डिनः पापरता नास्तिका भेदबुद्धयः। स्त्रीलम्पटा दुराचाराः कृतघ्ना बकवृत्तयः।।107।।
कर्मभ्रष्टाः क्षमानष्टाः निन्द्यतर्कैश्च वादिनः। कामिनः क्रोधिनश्चैव हिंस्राश्चंडाः शठास्तथा।।108।।
ज्ञानलुप्ता न कर्तव्या महापापास्तथा प्रिये। एभ्यो भिन्नो गुरुः सेव्य एकभक्त्या विचार्य च।।109।।

अर्थात् भगवान किस प्रकार के व्यक्ति को गुरु बनाना चाहिए इसके बारे में बता रहे हैं। वह बता रहे हैं कि जो खुद वितंडा और अन्य पाप गुणों से भरा हुआ है, वह कैसे एक व्यक्ति का गुरु हो सकता है क्योंकि वह खुद पाप के अंधेरे में बैठा हुआ है ऐसे में शिष्य को उजाने में ले जाने का उसका कार्य संपादित नहीं हो सकता है। सो ऐसे अवगुणों से भरे व्यक्ति को तुरंत छोड़ देना ही श्रेयस्कर है। वैसे भी कहा गया है कि जिसको खुद आता होगा वही तो सिखा सकता है।

अर्थ : दिखावे से भ्रान्ति देने वाले गुरु का त्याग कर धैर्यवान गुरु का ही आश्रय लेना चाहिए। पाखंडी, पाप में रत, नास्तिक, भेद बुद्धि पैदा करने वाले, बगुला बुद्धि वाले, भ्रष्ट, क्षमा न करने वाले, वितंडा फैलाने वाले, कामी, क्रोधी, हिंसक, उग्र, शठ और अज्ञानी को गुरु नहीं बनाना चाहिए। उपरोक्त लक्षणों से रहित व्यक्ति में ही गुरु ढूंढना चाहिए।जारी...

वर्षः 15, अंकः 6
मई 2018

कहां - क्या

वैकुंठवासी महाराज
गुरुवाणी 04
गुरु निर्णय करवा देते हैं 08
मंत्रोपदेश करना सरल नहीं 40

गुरुदेव
संदेश 03
गुरू गीता (सरल)– जो खुद अंधेरे में बैठा है, वो उजाला कैसे देगा 05
भगवान के साथ जुड़ना 10
इस संसार में भेजने वाले सच्चिदानंद 34

अन्य
संपादकीय : 06
कर्म और फल
रिसोर्स योरसेल्फ : 07
जवाहरात और अमृत सबको चाहिए, हलाहल कौन पीएगा
मई माह के पर्व 42

कर्म और फल

संपादकीय : गीता चैतन्य

नियमित सत्संग में आने वाले एक आदमी ने जब एक बार सत्संग में यह सुना कि जिसने जैसे कर्म किये हैं उसे अपने कर्मों के अनुसार वैसे ही फल भी भोगने पड़ेंगे। यह सुनकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ। अपनी आशंका का समाधान करने हेतु उसने सतसंग करने वाले संत जी से पूछा..... अगर कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा तो फिर सत्संग में आने का क्या फायदा है..... ? संत जी ने मुसकुरा कर उसे देखा और एक ईंट की तरफ इशारा कर के कहा की तुम इस ईंट को छत पर ले जा कर मेरे सर पर फेंक दो। यह सुनकर वह आदमी बोला संत जी इससे तो आपको चोट लगेगी दर्द होगा। मैं यह नहीं कर सकता। संत ने कहा....अच्छा, फिर उसे उसी ईंट के भार के बराबर का रुई का गट्ठा बांध कर दिया और कहा अब इसे ले जाकर मेरे सिर पे फैंकने से भी क्या मुझे चोट लगेगी.... ? ? वह बोला नहीं... संत ने कहा.....बेटा इसी तरह सत्संग में आने से इन्सान को अपने कर्मों का बोझ हल्का लगने लगता है और वह हर दु:ख तकलीफ को परमात्मा की दया समझ कर बड़े प्यार से सह लेता है। सत्संग में आने से इन्सान का मन निर्मल होता है और वह मोह माया के चक्कर में होने वाले पापों से भी बचा रहता है और अपने सतगुरु की मौज में रहता हुआ एक दिन अपने निज घर सतलोक पहुँच जाता है, जहाँ केवल सुख ही सुख है।

रिसोर्स योरसेल्फ

शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'

जवाहरात और अमृत सबको चाहिए, हलाहल कौन पीएगा!

समुद्र मंथन करने के लिए देव दानवों ने बढ़ चढ़कर एक दूसरे का सहयोग किया। मंथन से निकले हीरे, जवाहरात, नग, ऐरावत, अमृत सभी को चाहिए। सभी एक दूसरे से आगे बढ़कर मांग रहे हैं और बांट रहे हैं, एक दूसरे से छीन रहे हैं लेकिन उसी मंथन में से निकलने वाले हलाहल, जी बिल्कुल ठीक सुन रहे हैं, विष- उसे कौन पीएगा। इसके लिए कोई परस्पर होड़ नहीं है, कोई खींचतान नहीं है। सब एक दूसरे की ओर उछाल रहे हैं। तभी महादेव आते हैं और हलालत ले लेते हैं। वह हलाहल को अपने कंठ में भर लिए। कंठ नीला हो गया तो नील कंठ कहलाए। लेकिन इस घटना से न तो देवताओं को कोई फर्क पड़ा और न ही दानवों पर ही कोई अंतर हुआ। होता भी कैसे, वो मानव थोड़े ही हैं। कथानक वैसे भी मानवों को समझाने के लिए कहे जाते हैं और जो इनकी रचना करते हैं वह भी मानव ही होते हैं। बेशक कथानकों के नायक और केंद्र में रहने वाले किरदार देवता अथवा दावन हुआ करते हैं। तो मैं कह रहा था कि कथानकों का देवताओं और दानवों से क्या लेना देना, यह तो मानवों के लिए हैं। बात एक दम सही है, और सही लगे तो इसे ले लेना। धार्मिक केंद्रों पर इस प्रकार के मंथन हर रोज हर क्षण हुआ करते हैं। इसमें कितने ही देवों और दानवों के पुरुषार्थ लगते हैं लेकिन निकलने वाले हलाहल का क्या। यह तो वह महादेव ही पीएंगे जो अपनी हर किन्तु परन्तु को छोड़कर ऐसे केंद्रों पर आते हैं। मैं उन्हें सच्चा सेवादार कहता हूं। इन लाड़लों पर बाबा कृपा बनाए रखें। जयगुरुदेव!

बाबा का संदेश

गुरू निर्णय करवा देते हैं...

वैकुंठवासी जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज

संस्थापक-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

आप ही देखिए कि ब्रह्म नाच रहा है और अहीर की छोहरियों से छाछ मांग रहा है। माखन चोर कहलाया जा रहा है। लोग उसको व्यभिचारी भी कहते हैं और चोर भी कहते हैं। किन्तु यह वचन अपवाद है, कहने वालों की मिथ्या धारणा है। वह ब्रह्म है, ब्रह्म ने क्या-क्या नहीं किया। वह तो लीला धाम हैं। अपनी लीलाओं के माध्यम से अपने भक्तों के लिए कुछ भी कर सकता है। यही उसकी महिमा है क्योंकि वह शरणागत वत्सल है। वे गोपिकाएं शरणागत हो चुकी थीं, राम के जन्म के समय ही।

जाकी रही भावना जैसी।
प्रभु मूरत देखी तिन्ह तैसी।। (मानस)

वहां भगवान ने मन ही मन में कह दिया कि हे सभासदों, जिसकी जैसी भावना है, उन भावनाओं के अनुसार मैं सबसे मिलूंगा और बहुतों से जब नहीं मिल पाऊं तो कृष्ण का जन्म लेकर मिलूंगा। ऐसा उन्होंने वरदान में कहा। गोपिकायें भगवान् के साथ प्यार चाहती थीं, खेलना चाहती थीं, उसकी मारपीट करना चाहती थीं, गाली-गलौच

करना चाहती थीं। ऐसी उनकी भावनाएं थीं। भगवान कृष्ण गोपिकाओं को लुभाने के लिए लीलाएं कर रहे थे, तब गोपिकाओं की स्थिति अद्‌भुत हो गयी थी।

शुकदेव जी कहते हैं कि गोपियां कृष्ण की बातें सुनकर चिन्तित हो गई। उनके लाल लाल अधर शोक के कारण लम्बी-लम्बी गर्म-गर्म सांसों से सूख गये। उन्होंने अपने मुख नीचे की ओर लटका दिये, पैर के नाखूनों से धरती कुरेदने लगीं। आंखों से अश्रुधारा बह निकली। वे कुछ भी नहीं बोल सकीं। चुपचाप खड़ी रह गईं। गोपियों ने अपने प्यारे श्यामसुन्दर के लिए सारी कामनाएं, सारे भोग छोड़ दिये। श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य अनुराग था। अन्ततः उन्होंने श्रीकृष्ण से कहा, हे भगवान, तुम तो घट-घट में व्याप्त हो। आपको इस प्रकार निष्ठुर वचन नहीं कहना चाहिए। हम सब तो आपके चरणों से स्नेह करती हैं। जब हम शरणागति को प्राप्त हो गई तो आप हमें छोड़कर कहां जायेंगे?

हम चाहें कि आज शरणागत हो जायें और आज ही धन के अम्बार लग जायें, यह हमारी मूर्खता है। हम शरणागत होने से पूर्व की कामना लेकर चल रहे हैं तो शरणागति का प्रश्न ही नहीं है। हम शरणागत कहां हुए? हम भगवान के नहीं, हमारी कामनाओं के, हमारी सम्पदा के, हमारे धन के शरणागत हुए हैं। अब ऐसी शरणागति का कोई प्रयोजन नहीं है।

शरणागत उसका नाम है कि दे दे तेरी इच्छा, न दे तो तेरी इच्छा, पर तू मेरा है। शरणागत के लिए एक ने कहा कि देखिए, भगवान राम तो वैभवशाली हैं और शिव जी ऐसे हैं, फलां ऐसे हैं, फलां ऐसे हैं। महात्मा जी बोले, ठीक है, अच्छी बात है। हम तो उसकी शरणागत हैं। चाहे वह धनवान हैं, लक्ष्मीपति हों तो हमें क्या? वह बिल्कुल बदसूरत हों तो हमें क्या? हम तो शरणागत हैं। हमने तो एक रूप देखा है और वही हमारे मन में समाया हुआ है। सन्त ने कहा, भगवान चाहे लक्ष्मीपति हो, चाहे बैकुण्ठ को छोड़कर मृत्यु लोक में आकर वेंकटेश बन जायें, चाहे मांगने लगें, इससे हमें क्या लेना-देना। वह ब्रह्म पिट रहा है तो हमें क्या लेना-देना। हमने तो वह रूप निकाला है, हमारे लिए तो चौबीसों घण्टे वह है। इसके गुण-अवगुणों की हमें परीक्षा लेने की जरूरत ही नहीं।

मानव को अपने मानस में अशुभ विचार नहीं लाने चाहिए। शरणागति में कुविचार लाना ही शरणागति से दूर हो जाना है। शरणागति का अर्थ है अपने आपको समर्पित कर देना। यदि इस समर्पण में मन में कोई तर्क-वितर्क है या छल-कपट है तो शरणागति का फल कभी नहीं मिलेगा।

हम चाहें कि आज शरणागत हो जायें और आज ही धन के अम्बार लग जायें, यह हमारी मूर्खता है। हम शरणागत होने से पूर्व की कामना लेकर चल रहे हैं तो शरणागति का प्रश्न ही नहीं है।

बाबा कहते हैं

भगवान के साथ जुड़ना

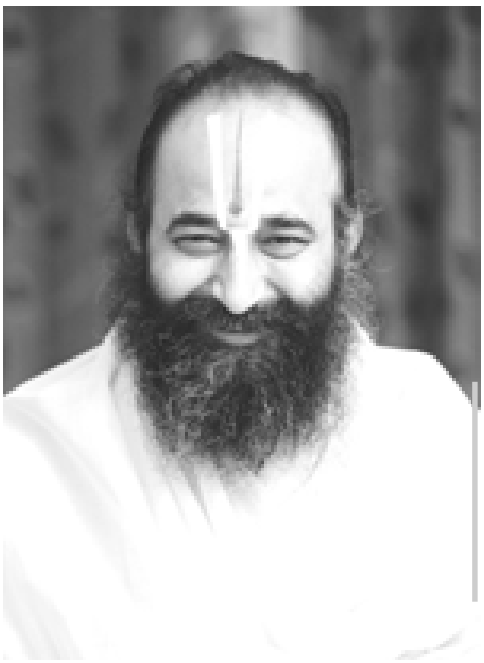

श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज, *पीठाधिपति-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम*

भगवान के साथ जुड़ने की आशा पालने वालों को अपने जीवन में इसके लिए कोशिश भी करनी चाहिए। सबसे पहली बात तो यह है कि परमात्मा ने अपने विशेष गुणों से युक्त यह बहुपयोगी मानव शरीर हमें सौंप दिया। सबसे पहले तो इसी के लिए हमें परमात्मा का शुक्रिया अदा करना चाहिए। हर व्यक्ति परमात्मा को प्राप्त करना चाहता है। दिन रात वह इसी प्रयास में लगा रहता है कि वह परमात्मा को प्राप्त कर ले। वह इसके लिए पूजा-अर्चना, हवन, पाठ आदि माध्यमों का सहारा लेता है। लेकिन सही मायने में वह परमात्मा को पाने का प्रयास नहीं करता। अगर किसी व्यक्ति को परमात्मा को प्राप्त करना है, तो उसे स्वयं ही प्रयास करना होगा। दुनिया में आज तक कोई ऐसा गुरु नहीं हुआ है, जो हमारे बदले में तपस्या कर ले और उसका फल हमें प्राप्त हो जाए। वह कृपा तो कर सकते हैं, लेकिन उनके तप का फल हमें नहीं मिल सकता। इसलिए गुरु मात्र रास्ता दिखाने, बातने और चलाने वाले हैं। चलना तो शिष्य को ही पड़ेगा। भगवान की प्रतिज्ञा में

कहा गया है कि तू मेरे मार्ग पर एक कदम चलेगा तो मैं तेरी ओर दस कदम चलूंगा। लेकिन पहले चलना होगा। तमाम गुरु मार्ग बताने वाले हैं, वे हमारे बदले में कार्य नहीं करेंगे।

जो दूसरे को जिस भाव से आमंत्रित करता है, उसे उसका फल भी उसी भावानुरूप ही मिलता है। जो लोग हृदय से आमंत्रित करते हैं, तो उन लोगों के हृदयों का मिलन होता है और इसके बाद जो फल मिलता है वो भी सकारात्मक होता है। जब उनके हृदय से दुआ या आशीर्वाद निकलता है तो वह बहुत ही प्रभावकारी होता है। जब आप दीपावली के अवसर पर अपने घर में लक्ष्मी जी के आगमन पर उनके स्वागत के लिए घर की साफ-सफाई करते हैं, दीवारों पर रंग रोगन करते हैं और फिर दीप जलाकर माता लक्ष्मी का आह्वान करते हैं। आप सोचते हैं कि माता लक्ष्मी के आगमन पर उन्हें कोई कठिनाई न हो, वे सुगमता से आपके घर आ सकें और आपकी तैयारी देखकर प्रसन्न हो जाएं। आप दीवाली पर इतनी साफ सफाई कर लेते हैं, लेकिन परमात्मा को तो आप चौबीसों घंटे अपने घर पर बुलाना चाहते हैं, तो क्या आपने इसके लिए अपने घर की सफाई कर ली क्या आपने अपने घर का कूड़ा-करकट बाहर फेंक दिया? जिस दिन आपके शरीर रूपी घर से कूड़ा-करकट निकल जाएगा, आपको परमात्मा के स्वरूप का प्रकाश धीरे-धीरे प्राप्त होने लगेगा। इसके बाद आपके शरीर का रूपांतरण हो जाएगा। जिस दिन हमारी वृत्ति जाग जाएगी और शरीर की ऊर्जा चार्ज करने के लिए किसी मेन लाइन से आप जुड़ जाएंगे, तो फिर आपको संतत्व और बुद्धत्व की प्राप्ति हो जाएगी। आपको परमात्मा के क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति मिल जाएगी।

आप अपने आत्मिक सुधार की बात करें। जिस दिन आपका शरीर चार्ज हो जाएगा, उस दिन आपके शरीर का एक-एक क्षण महोत्सव हो जाएगा, एक-एक पल प्रसन्नता से भर जाएगा। इसके लिए आपको केवल रूपांतरित होने की आवश्यकता है।

जिस क्षण आप रूपांतरित हो जाएंगे, उसी क्षण परमात्मा आपको एक पात्र समझकर उसमें प्रवेश कर जाएंगे। सभी जानते हैं कि लोहे और लकड़ी में से लोहे के द्वारा तो विद्युत प्रवाह हो जाता है, लेकिन लकड़ी के माध्यम से यह असंभव है। लकड़ी तो उष्मा या विद्युत का कुचालक होती है, जबकि लोहा इनके लिए सुचालक का रूप धारण कर ले, ताकि जैसे ही परमात्मा की धारा छूटे, वह सीधे आपके शरीर में प्रवेश कर जाए। उस समय आप भी अपने आप को संसार से ऊपर उठा हुआ महसूस करेंगे। वे संत लोग ही होते हैं, जो अपने को चार्ज कर चुके होते हैं और उसके बाद उनके जीवन में दुख-सुख का कोई स्थान नहीं रहता है। आपने उन्हें पुष्प-माला पहना दी, उन्होंने पहन ली, उन्हें कोई चिंता नहीं, कोई राग-द्वेष नहीं रहता। जो दुख और सुख से ऊपर उठ जाए, वही तो परमात्मा का सच्चा भक्त है।

कृष्ण ने अर्जुन से कहा तुम सुख और दुख से ऊपर उठ जाओ, इनसे ऊपर उठने की कला का नाम

है परमात्मा को पाने का प्रयास। आप किसी मंदिर या धार्मिक स्थल पर जाकर रामचरितमानस या अन्य किसी पुस्तक का पाठ करते हैं। कभी आप अपने शरीर पर भी रामचरितमानस का पाठ कर लें। आप गंगा स्नान से केवल अपने शरीर को ही धोते हैं। शरीर को धोने से कुछ नहीं होगा, आप अपने शरीर के अंदर के विकारों को धोने का प्रयास करें। आप अपने अहंकार, काम, क्रोध, मद, लोभ एवं मोह को गंगा में विसजिज्त कर दें। गंगा ािन का अथज़ ही होता है कि गंगा में प्रवेश के उपरांत अपनी तमाम बुराइयों का विसर्जन कर देना। लोग हवन कुंड बनवाते हैं और आत्मकल्याण यज्ञ भी करवाते हैं, कुछ यज्ञ देश कल्याण के लिए भी होते हैं। लेकिन सबसे पहले आप अपने कल्याण के लिए हवन करें और उस हवन कुंड में अपने शरीर की तमाम दुष्प्रवृत्तियों और बुराइयों को भस्म कर दें। इसके बाद आप निष्पाप, निष्कलंक, सरल, सुगम और बोधगम्य हो जाएंगे और तभी आप परमात्मा को अपने अंदर बुलाकर बैठा सकेंगे। यदि आपके घर कोई व्यक्ति आता है, आपके घर में चार कुर्सियां हैं और चारों कुर्सियों पर चार भद्र पुरुष विराजमान हैं और आप आगंतुक से भी कह रहे हैं, आइये महाराज पधारिए। आगंतुक तभी तो बैठ पाएगा जब उसे बैठने के लिए जगह मिलेगी। यदि आगंतुक को यह महसूस होगा कि उसे वहां नहीं बैठना चाहिए तो वह वहां से चला जाएगा। इसलिए आप पहले वह जगह तो बनाएं।

सबसे पहले अपने अंदर परमात्मा के बैठने लायक जगह बनाएं। व्यक्ति काम, क्रोध, घृणा, हिंसा इत्यादि विकारों को स्वयं बुलाता है। सबसे पहले अपनी पात्रता का ध्यान रखें, उसे खाली करने की आवश्यकता है। जिस दिन से आप ऐसा करना शुरु करेंगे, उसी दिन से आपके जीवन में हजारों प्रकार की प्रसन्नताएं अपना स्थाई घर बना लेंगे। लेकिन इसके लिए प्रयास करना होगा। कोई भी केवल पुस्तकें पढ़कर अपने जीवन में फूल खिला नहीं खिला सकता है। केवल प्रवचन सुनने मात्र से जीवन सार्थक नहीं होने वाला है। इसके लिए कोशिश भी करनी होगी। जीवन में प्रसन्नता व मुक्ति मात्र आत्मचिंतन से ही आ सकती है। आत्म चिंतन को जागृत करें, फिर आप महसूस करेंगे कि परमात्मा का सीधा प्रकाश आपके ऊपर पड़ना आरंभ हो जाएगा। आप महसूस करेंगे के एक ओर आप खड़े हैं और दूसरी ओर परमात्मा। आपने, अपने और परमात्मा के बीच में बहुत मोटा पर्दा डाल रखा है। आप उस पर्दे को हटा दें, जब तक पर्दे को नहीं हटाएंगे, तब तक परमात्मा के दर्शन नहीं होंगे।

आप किसी मंदिर या धार्मिक स्थल पर जाकर रामचरितमानस या अन्य किसी पुस्तक का पाठ करते हैं। कभी आप अपने शरीर पर भी रामचरितमानस का पाठ कर लें।

जैसा कर्म होता है भूमि वैसा संस्कार अपना लेती है

जिस भूमि में जैसे कर्म किए जाते हैं, वैसे ही संस्कार वह भूमि भी प्राप्त कर लेती है। इसलिए गृहस्थ को अपना घर सदैव पवित्र रखना चाहिए।

जिस भूमि में जैसे कर्म किए जाते हैं, वैसे ही संस्कार वह भूमि भी प्राप्त कर लेती है। इसलिए गृहस्थ को अपना घर सदैव पवित्र रखना चाहिए। मार्कण्डेय पुराण में एक कथा आती है कि राम और लक्ष्मण वन में प्रवास कर रहे थे। मार्ग में एक स्थान पर लक्ष्मण का मन कुभाव से भर गया और मति भ्रष्ट हो गई। वे सोचने लगे- कैकेयी ने तो भैया राम को वनवास दिया है, मुझे नहीं। मैं राम की सेवा के लिए कष्ट क्यों उठाऊँ?

राम ने लक्ष्मण से कहा- इस स्थल की मिट्टी अच्छी दीखती है, थोड़ी बांध लेते हैं। लक्ष्मण ने एक पोटली बना ली। मार्ग में जब तक लक्ष्मण उस पोटली को लेकर चलते थे तब तक उनके मन में कुभाव बना रहता था। वहीं जैसे ही वे उस पोटली को नीचे रखते उनका मन राम-सीता के लिए ममता और भक्ति से भर जाता था।

लक्ष्मण ने इसका कारण भगवान श्री राम से पूछ। श्रीराम ने कारण बताते हुए कहा- भाई! तुम्हारे मन के इस परिवर्तन के लिए दोष तुम्हारा नहीं उस मिट्टी का प्रभाव है, जिसकी तुमने पोटली बांध रखी

है। उन्होंने लक्ष्मण को बताया कि जिस भूमि पर जैसे काम किए जाते हैं उसके अच्छे बुरे परमाणु उस भूमि भाग में और वातावरण में भी छूट जाते हैं। जिस स्थान की मिट्टी इस पोटली में है, वहां पर सुंद और उपसुंद नामक दो राक्षसों का निवास था। उन्होंने कड़ी तपस्या कर ब्रह्मा जी को प्रसन्न करके अमरता का वरदान मांगा। ब्रह्मा जी ने उनकी मांग तो पूरी करनी चाही किन्तु कुछ नियन्त्रण के साथ। उन दोनों भाइयों में बड़ा प्रेम था। अत: उन्होंने कहा कि हमारी मृत्यु केवल आपसी विग्रह से ही हो सके। ब्रह्माजी ने वर दे दिया।

वरदान पाकर दोनों ने सोचा कि हम कभी आपस में झगड़ने वाले तो हैं नहीं अत: अमरता के अहंकार में देवों को सताना शुरु कर दिया। जब देवों ने ब्रह्माजी का आश्रय लिया तो ब्रह्माजी ने तिलोत्तमा नाम की अप्सरा का सर्जन करके उन असुरों के पास भेजा। सुंद और उपसुंद इस सौन्दर्यवती अप्सरा को देखकर कामांध हो गए और अपनी अपनी कहने लगे। तब तिलोत्तमा ने कहा कि मैं तो विजेता के साथ विवाह करूंगी, तब दोनों भाइयों ने विजेता बनने के लिए आपस में ऐसा घोर युद्ध किया कि दोनों की मृत्यु हो गई। वे दोनों असुर जिस स्थान पर झगड़ते हुए मरे थे, उसी स्थान की यह मिट्टी है। अत: इस मिट्टी में भी द्वेष, तिरस्कार और वैर का सिंचन हो गया है।

श्री सिद्धदाता आश्रम फेसबुक पर भी

श्री सिद्धदाता आश्रम में आयोजित होने वाले पर्वों एवं क्रियाकलापों की जानकारी फेसबुक पर पाने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर जाकर लाइक करें।

www.facebook/shrisidhdataashram

Shri Sidhdata Ashram is now on Facebook.

You can watch photographs of latest events, weekly message from Shri Guruji ans get regulat updates from Ashram on your facebook account.

To receive updates on your Facebook account visit Ashram's FB page

www.facebook.com/shrisidhsataashram

and click on Like

also do visit our website www. shrisda.org to watch latest News, Updates, Photographs and to download Books, Monthly Magazine and Wallpapers.

जानिए रामानुजाचार्य और गुरू के बारे में

भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायण इस जगत के माता-पिता हैं और सभी जीव उनकी संतान हैं।

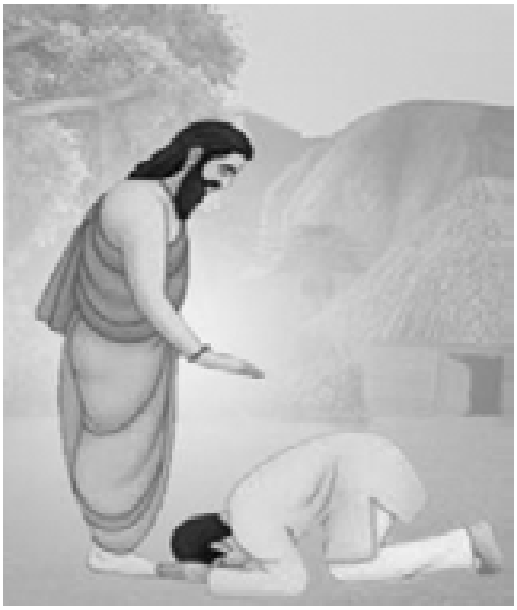

श्री रामानुजाचार्य के पिता का नाम केशव भट्ट था। वह दक्षिण पेरूंबदूर क्षेत्र में रहते थे। जब श्री रामानुजाचार्य की अवस्था बहुत छोटी थी, तभी इनके पिता का देहावसान हो गया। इन्होंने काञ्ची में यादव प्रकाश नामक गुरु से वेदाध्ययन किया। इनकी बुद्धि इतनी कुशाग्र थी कि यह अपने गुरु की व्याख्या में भी दोष निकाल दिया करते थे। फलत: इनके गुरु ने इन पर प्रसन्न होने के बदले ईर्ष्यालु होकर इनकी हत्या की योजना बना डाली, किन्तु भगवान् की कृपा से एक शिकारी और उसकी पत्नी ने इनके प्राणों की रक्षा की।

श्री रामानुजाचार्य बड़े ही विद्वान, सदाचारी, धैर्यवान और उदार थे। चरित्रबल और भक्ति में तो वह अद्वितीय थे। इन्हें योग सिद्धियां भी प्राप्त थीं। यह श्री यामुनाचार्य की शिष्य परम्परा में थे। जब श्री यामुनाचार्य की मृत्यु सन्निकट थी, तब उन्होंने अपने शिष्य के द्वारा श्री रामानुजाचार्य को अपने पास बुलवाया, किन्तु इनके पहुंचने से पूर्व ही श्री यामुनाचार्य की मृत्यु हो गई।

वहां पहुंचने पर श्री रामानुजाचार्य ने देखा कि श्री यामुनाचार्य की तीन अंगुलियां मुड़ी हुई थीं। श्री रामानुजाचार्य ने समझ लिया कि श्री यामुनाचार्य इनके माध्यम से 'ब्रह्मसूत्र', 'विष्णुसहस्रनाम' और अलवन्दारों के 'दिव्य प्रबंधम' की टीका

करवाना चाहते हैं। श्री रामानुजाचार्य ने श्री यामुनाचार्य के मृत शरीर को प्रणाम किया और कहा, ''भगवन! मैं आपकी इन अंतिम इच्छाओं को अवश्य पूरा करूंगा।'' श्री रामानुजाचार्य गृहस्थ थे, परन्तु जब इन्होंने देखा कि गृहस्थी में रह कर अपने उद्देश्य को पूरा करना कठिन है, तब इन्होंने गृहस्थ आश्रम को त्याग दिया और श्री रंगम् जाकर यतिराज नामक संन्यासी से संन्यास धर्म की दीक्षा ले ली। इनके गुरु श्री यादव प्रकाश को अपनी पूर्व करनी पर बड़ा पश्चाताप हुआ इसलिए वह भी संन्यास की दीक्षा लेकर श्री रंगम् चले आए और श्री रामानुजाचार्य की सेवा में रहने लगे। श्री रामानुजाचार्य ने भक्ति मार्ग का प्रचार करने के लिए सम्पूर्ण भारत की यात्रा की। इन्होंने भक्ति मार्ग के समर्थन में गीता और ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखा। वेदांत सूत्रों पर इनका भाष्य श्रीभाष्य के नाम से प्रसिद्ध है। इनके द्वारा चलाए गए सम्प्रदाय का नाम भी श्रीसम्प्रदाय है।

इस सम्प्रदाय की आद्यप्रवर्तिका श्री महालक्ष्मी जी मानी जाती हैं। श्री रामानुजाचार्य ने देशभर में भ्रमण करके लाखों नर-नारियों को भक्ति मार्ग में प्रवृत्त किया। इनके चौहत्तर शिष्य थे।

इन्होंने महात्मा पिल्ललोकाचार्य को अपना उत्तराधिकारी बनाकर एक सौ बीस वर्ष की अवस्था में इस संसार से प्रयाण किया। श्री रामानुजाचार्य के सिद्धांत के अनुसार भगवान् नारायण ही पुरुषोत्तम हैं और वे ही प्रत्येक शरीर में साक्षी रूप से विद्यमान हैं। भगवान नारायण ही सत् हैं, उनकी शक्ति महालक्ष्मी चित हैं और यह जगत उनके आनंद का विलास है। भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायण इस जगत के माता-पिता हैं और सभी जीव उनकी संतान हैं।

शिष्य होने का अर्थ क्या है ? शिष्य होने का अर्थ है पूरे अस्तित्व के प्रति खुले होना। हर समय हर ओर से सीखने को तैयार रहना। कभी किसी कि बात का बुरा नहीं मानना चाहिए, किसी भी इंसान की कही हुई बात को ठंडे दिमाग से एकांत में बैठकर सोचना चाहिए कि उसने क्या क्या कहा और क्यों कहा। तब उसकी कही बातों से अपनी की हुई गलतियों को समझें और अपनी कमियों को दूर करे। जीवन का हर क्षण, हमें कुछ न कुछ सीखने का मौका देता है। हमें जीवन में हमेशा एक शिष्य बनकर अच्छी बातों को सीखते रहना चाहिए। यह जीवन हमें आये दिन किसी न किसी रूप में किसी गुरु से मिलाता रहता है। यह हम पर निर्भर करता है कि क्या हम एक शिष्य बनकर गुरु से मिलने वाली शिक्षा को ग्रहण कर पा रहे हैं कि नहीं!

सूर्य देव हैं तो उनका घर में प्रवेश भी जरूरी है

मार्ग में अपने को झोंककर ज्ञान की मंजिल पाओ। ज्ञान किसी का सगा नहीं है। जो उसे कमाता है, वह उसी के पास जाता है।

यदि सूर्य का प्रकाश घर में आता है तो उसमें रहने वाले उत्साह व ऊर्जावान महसूस करेंगे। जहां तक हो सके प्राकृतिक प्रकाश को महत्व देना चाहिए। दिन के समय प्राकृतिक प्रकाश को रोकने वाले गतिरोध को दूर करना चाहिए तथा खिड़कियों के परदे खुले रहना चाहिए, ताकि घर में ज्यादा से ज्यादा सूर्य की किरणें प्रवेश कर सकें। जहां तक हो सके घर में कृत्रिम रोशनी को कम से कम रखना चाहिए। हमारे शयन कक्ष में सदैव धीमा लाइट होना चाहिए। यदि शयनकक्ष में तेज रोशनी होगी तो हमारे आराम में बाधा डालेगी और नींद नहीं आएगी। शयनकक्ष या आरामकक्ष में हमारे सन्मुख लाइट नहीं होना चाहिए। पढ़ाई का कमरा यदि अलग है तो पढ़ते वक्त आंखों पर तेज रोशनी नहीं होना चाहिए, नहीं तो हमें पढ़ने में बाधा पहुंचेगी और नींद आने लगेगी। पढ़ाई के रूप में किताबों पर न अधिक न कम रोशनी पड़ना चाहिए। घर में प्रत्येक कमरे में अधिक से अधिक प्राकृतिक प्रकाश को लाने का प्रबंध करना चाहिए। इसके लिए खिड़कियां व वेंटिलेटर प्रमुख सहायक होते हैं। अत: मकान बनते वक्त इस बातों का ध्यान रखना चाहिए।

लेख

अध्यात्मिक होने से मन साफ रहता है

अध्यात्म इसी गंदे मन की सफाई की प्रक्रिया है। यह मन सबसे ज्यादा हमारी कामनाओं की वजह से गंदा होता है।

आत्मा पहले से ही आजाद, शांत, ज्ञानस्वरूप और प्रेमस्वरूप है, इसमें हम न तो बाहर से प्रेम डाल सकते हैं, न इसमें ज्ञान भर सकते हैं और न ही इसको मुक्त कर सकते हैं। गुरु से मिला ज्ञान केवल आत्मा के ऊपर आए अज्ञान को हटाने के लिए होता है, क्योंकि हम ज़िंदगीभर अपने मन को मैं-मेरा से पैदा हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह जैसे विकारों से भर देते हैं। हमारा मन काम के फलों से गंदा हो जाता है, इसलिए आत्मा का प्रकाश और उसकी दिव्यता इसी मन के माध्यम से बाहर की ओर की बहती है। ऐसे में अगर मन रूपी रास्ता ही मैला होगा तो आत्मा का ज्ञान किस तरह बाहर की ओर आएगा। अध्यात्म इसी गंदे मन की सफाई की प्रक्रिया है। यह मन सबसे ज्यादा हमारी कामनाओं की वजह से गंदा होता है, क्योंकि जब तक इच्छाओं का अंत नहीं होता, इस तरह से मन गंदा होकर आत्मा के ज्ञान को ढकता रहेगा। यह कुछ ऐसा ही है जैसे धुआं आग को और धूल आइने को ढक देती है। इसलिए हमारी कोशिश इच्छाओं को काबू में कर मन को साफ़ करने की होनी चाहिए। जैसे-जैसे मन साफ होगा आत्मा के ज्ञान का अनुभव होने लगेगा। जैसे आग धुएं से, आइना धूल से ढका रहता है, वैसे ही ज्ञान काम वासनाओं से ढका रहता है।

जीवन प्रेम से ही चलता है और प्रेम में विलीन

तुम जीवन में प्रेम से बच नहीं सकते। प्रेम अटल और अमर है। दिव्य प्रेम कभी नहीं बदलता, वह अमर है।

प्रेम के बिना जीवन एक कदम भी आगे नहीं चल सकता। जीवन प्रेम से ही प्रकट हुआ है, प्रेम से ही चलता है और प्रेम में ही विलीन हो जाता है। हरेक इच्छा के पीछे प्रेम है। फिर भी हमने देखा है कि प्रेम के साथ समस्या नाम की पूंछ भी आती है। अगर तुम वस्तुओं से ज्यादा प्रेम करते हो तो वह लालच बन जाता है, अगर तुम लोगों से ज्यादा प्रेम करते हो तो वह मोह बन जाता है, अगर तुम स्वयं से बहुत प्यार करते हो तो उससे अभिमान और अहं प्रकट होता है और तुम किसी से बहुत ज्यादा प्रेम करो तो ईर्ष्या पीछे-पीछे चली आती है।

चाहे वह ईर्ष्या हो, लालच हो, आसक्ति हो या क्रोध हो, सब में प्रेम शामिल है। इस ग्रह की सभी समस्याओं का कारण प्रेम ही है। प्रेम के बिना जीवन हो ही नहीं सकता। मकड़ी खुद अपना जाल बुनती है और उसी में फंस जाती है, फिर भी जाल के बगैर मकड़ी का होना नामुमकिन है। मानव जीवन भी ठीक ऐसी ही स्थिति में है। प्रेम के बिना उसका अस्तित्व नहीं हो सकता। प्रेम तुम्हारी आजादी और मानव जीवन के स्वच्छंद रहने की मूलभूत प्रकृति को छीन लेता है। इसलिए, तुम्हें ऐसे प्रेम की तलाश है, जो तुमसे तुम्हारी आजादी न छीने। वह प्रेम जो तुम्हें सब दोषों के परे देखे और जीवन के निर्मल सार का

समर्थन करे। ऐसे प्रेम को भक्ति या दिव्य प्रेम कहते हैं।

वह तुम्हें कैसे मिले? ऐसे प्रेम को लेकर कौन जिया है? इन सब सवालों के जवाब पाने की खोज से ही आध्यात्मिक यात्रा प्रारम्भ होती है। आध्यात्मिक यात्रा इस दुनिया से परे कोई अलग ही वस्तु प्राप्त करने की कल्पना नहीं है। यह जीवन के परम लक्ष्य को पाने की चेष्टा है, जिसे भक्ति या दिव्य प्रेम कहते हैं। प्रेम क्या है- यदि तुम्हें ये बिल्कुल पता ही नहीं है तो तुम दिव्य प्रेम को नहीं समझ पाओगे। प्रेम की कई अभिव्यक्तियां हैं, जैसे अपनों से छोटों के प्रति स्नेह होता है, हमउम्र लोगों से दोस्ती और अपने से बड़ों के प्रति सम्मान और आदर। इसी तरह वस्तुओं, पशुओं, पेड़ों, आहार और संगीत से प्रेम होता है। तुम्हारी पसंद, नापसंद भी प्रेम पर आधारित है।

वह आदमी जो सुन नहीं सकता, उसे हम किसी भी तरह ये समझा नहीं सकते कि ध्वनि क्या है। हम उसी को समझा सकते हैं, जिसे पहले से कुछ मालूम हो। कोई देख नहीं सकता, कोई सुन नहीं सकता, पर प्रेम सब महसूस कर सकते हैं। यहां तक कि पत्थर और पशु भी प्रेम महसूस कर सकते हैं। कैसे बिल्लियां तुम्हारे पास आकर म्याऊं बोलते हुए घुरघुराने लगती हैं। कुत्ते भी प्रेम अभिव्यक्त करते हैं। वे तुम्हारे आगे पीछे भागते हुए अपनी पूंछ हिला-हिला कर अपना प्यार व्यक्त करते हैं। वे सब जगह कूदते फिरते हैं। जब तुम दो दिन बाहर जा कर घर वापस आते हो, वे पागल हो जाते हैं। बस तुम्हें देख कर उनकी समझ में नहीं आता वे क्या करें। वे तुम्हारे चारों ओर भागते हैं। यानी बिना कोई अपवाद के सभी में प्रेम महसूस करने की क्षमता है।

तुम जीवन में प्रेम से बच नहीं सकते। प्रेम अटल और अमर है। प्रेम हो जाना और प्रेम टूट जाना बहुत आसान है। एक दिन तुम्हें प्यार हो जाता है और दो महीने बाद ऐसा लगता है कि वो प्यार टूट गया है, लेकिन दिव्य प्रेम कभी नहीं बदलता, वह अमर है, उसके साथ कोई शर्त नहीं जुड़ी हुई है। ये उस परम प्रेम के लक्षण हैं, जिसमें तुम्हारे अंदर एक गहरी उत्कंठा, एक तीव्र अभीप्सा जन्म लेती है। पूर्णता के तीन स्तर हैं। कर्मों में पूर्णता, तुम्हारी वाणी में पूर्णता और तुम्हारे मन में तुम्हारे अस्तित्व की पूर्णता। कई लोग कर्म में उत्तम होते हैं, पर जरूरी नहीं कि उनकी भावना, उनकी वाणी अच्छी हो। कुछ लोगों की भावना अच्छी होती है, पर कर्म सही नहीं होते। गर्म देशों के लोगों में तुम पाओगे कि वे बहुत अच्छा महसूस करते हैं, बहुत सुंदर बोलते हैं, लेकिन जब काम करने की बात आती है तो वह होता नहीं है। ठंडी जलवायु के देशों में काम हो जाते हैं, पर वे अंदर से बड़े सख्त, हठी और कभी-कभी क्रोधित व परेशान होते हैं। लेकिन सिद्ध वही है, जो मन, वचन और कर्म से पूर्ण हो। तुम कभी भी, किसी भी कर्म को सौ प्रतिशत सही नहीं कर सकते हो, पर तुम अपने स्वभाव में सौ प्रतिशत सही रह सकते हो, इसे सिद्ध कहते हैं और सिर्फ प्रेम ही ये पूर्णता ला सकता है।

क्षमा के बड़े अनूठे लाभ हैं। इससे मानसिक शांति, रिश्तों में मिठास, कार्य-क्षमता में बढ़ोतरी, बेहतर नजरिया, प्रभावी भाषा और व्यक्तित्व विनम्र बनता है।

लोहे से मन को भगवान की तरफ मोड़ना ही पड़ेगा

मन अत्यंत व्याकुल हो जाए तब मन पर विवेक का हथौड़ा मारना चाहिए और भगवान् की तरफ मन को मोड़ देना चाहिए।

मन बहुत चंचल होता है बहुत जल्दी कहीं लगता नहीं है। हम भगवान् की तरफ अपने मन को मोड़ना तो चाहते हैं पर मुड़ता नहीं है। लोहा से बहुत से हथियार या सामान आदि बनाया जाता है। लोहा जब ठोस अवस्था में होता है तब उस से कोई भी अन्य आकृति बनाना आसान नहीं होता। उसे आकृति देने के लिए सबसे पहले लोहे को तपाया जाता है, लगातार ताप देने से वह लोहा अत्यंत गर्म हो कर द्रवीभूत हो जाता है फिर उसे मन चाही आकृति दे दी जाती है। इसी प्रकार यह मन भी लोहे की ही भांति अत्यंत कठोर होता है जल्दी भगवान् की तरफ नहीं मुड़ता मन को भी प्रभु की तरफ मोड़ने के लिए लोहे की भांति द्रवीभूत करना पड़ता है, मन द्रवीभूत होता है भगवान् के गुणानुवादों से मन को बार बार भगवान् के गुण, लीला, धाम, परिकर, संत आदि की बातें सुना सुना कर इसे कोमल बनाना चाहिए जब मन प्रभु के स्वरुप को पहचान कर उनको पाने के लिए अत्यंत व्याकुल हो जाए तब मन पर विवेक का हथौड़ा मारना चाहिए और भगवान् की तरफ मन को मोड़ देना चाहिए। एक बार जब मन भगवान् की तरफ मुड़ जायगा तब संसार छोड़ना नहीं पड़ता वह अपने आप छूट जाता है।

हिंदू यानि सनातन धर्म व्यवस्था के बारे में जानें

हिन्दू धर्म का उद्भव या निर्माण ही ज्ञान से हुआ है। अत: यह ज्ञान स्वरुप है। वेदों के रूप में इसमें परम ब्रह्म सदैव विद्यमान रहता है।

हिंदू धर्म विश्व का सबसे प्राचीन धर्म है। प्राचीन मिश्र, यूनान, बेबीलोन और रोम के धर्म नष्ट हो गए किन्तु हिन्दू धर्म अनादिकाल से आज भी विद्यमान है इसलिए इसे सनातन धर्म कहते हैं। इसकी प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

हिन्दू धर्म का उद्भव या निर्माण ही ज्ञान से हुआ है। अत: यह ज्ञान स्वरुप है। वेदों के रूप में इसमें परम ब्रह्म सदैव विद्यमान रहता है। विश्व का एकमात्र धर्म जिसका निर्माण ज्ञान व वर्षों के अध्ययन व साधना से हुआ है।

धर्म श्रेय और साधन दोनों है। श्रेय रूप में वह वेद है, ब्रह्म है। साधन रूप में वह धर्म प्राप्ति का मार्ग है।

जीव चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करता है। उसे मनुष्य योनि बड़े पुण्य से मिलती है। इस जन्म के बाद उसका पुनर्जन्म होता है जन्म मरण के इस चक्र को संसार चक्र कहते हैं।

जीवन के इस संसार चक्र में मनुष्य का एकमात्र साथी धर्म है। धर्म ज्ञान और कर्म दोनों रूप में है। कर्म रूप में वह तीन प्रकार का है– प्रारब्ध, संचित और क्रियमाण। वर्त्तमान जन्म जिस कर्म के फलस्वरूप मिलता है उसे प्रारब्ध कहते हैं।

प्रारब्ध के अतिरिक्त पूर्वजन्म के जो कर्म हैं वो संचित कहलाते हैं।

इस जन्म में जो कर्म किये जाते हैं उन्हें क्रियमाण कहते हैं। जिनका फल अगले जन्म में मिलता है। इसलिए हिन्दू धर्म कर्मवाद के सिद्धन्त को मानता है जिससे मनुष्य इस जीवन में अच्छे कर्म करके अपने आने वाले जीवन व अगले जन्म को संवार सके। प्रारब्ध को तो मनुष्य को इसी जन्म में भोगना पड़ता है परन्तु धर्म के द्वारा मनुष्य संचित व क्रियमाण के प्रभाव से बच सकता है।

कर्म और उसके फल का संयोग करने वाला ही ईश्वर है जो कण कण में व्याप्त है। कुछ उसे ईश्वर कहते हैं तो कुछ अदृष्ट और कुछ अपूर्व। ईश्वर ही सृष्टि करता है, पालता है व प्रलय करता है। ईश्वर मनुष्य को ज्ञान व भक्ति देकर कृतार्थ करता है। ईश्वर के विविध नाम व रूप हैं किन्तु उन सबका ईश्वरत्व एक है अर्थात सभी हिन्दू जिसको ईश्वर मानते वह गुण: और कर्म में एक ही है।

ईश्वर प्राप्त करने के मार्ग अनेक हैं जैसे – कर्म मार्ग, भक्ति मार्ग, ज्ञान मार्ग और योग मार्ग। ऋगवेद में कहा गया है कि सद एक है और विद्वान लोग उसको अनेक प्रकार से कहते हैं। इस प्रकार हिन्दू धर्म में उपासना के मार्ग अनेक हैं किन्तु सबकी मंजिल एक ही है।

ईश्वर धर्म की रक्षा के लिए और अधर्म का नाश करने के लिए तथा अपने भक्तों को दर्शन देने के लिए समय समय पर अवतार लेता है। वह ब्रह्माण्ड का पिता है इसकी रक्षा करना उसी का काम है। उसके अनेक अवतार हैं।

हिंदू धर्म के प्रमुख गुण है उदारता, सहिष्णुता व परोपकार जिससे हिन्दू धर्म का सदैव संरक्षण होता रहा है। कुछ लोग सोचते हैं कि अन्य धर्मों के प्रति उदारता तथा सहिष्णुता का भाव दिखाना हिन्दू धर्म की कमजोरी है जिसके कारण इस्लाम और मसीही मत के प्रचारकों ने कई हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन किया है। किन्तु यहाँ उल्लेखनीय है कि हिन्दुओं के इस्लाम और मसीही मत के अंतर्गत आने से इन धर्मों के मूलस्वरूप में कई परिवर्तन आ गए हैं। हिन्दू धर्म के अनेक आचार–विचार उनमें शामिल हो गए हिन्दुओं की जाति व्यवस्था भी भारतीय इस्लाम और मसीही मत में अच्छी तरह से प्रविष्ट और व्यवस्थित हो गयी।

हिन्दू धर्म किसी एक व्यक्ति को समस्त धर्म का प्रवक्ता या पैगम्बर नहीं मानता, यद्यपि वह प्रत्येक धर्म– प्रवक्ता या पैगम्बर की शिक्षा को महत्व देता है। जहाँ अन्य देशों के मतों ने धर्म को किसी एक व्यक्ति और उसकी परम्पराओं से जोड़ा वहीं हिन्दू धर्म ने धर्म को उस रूप में प्रकट करने का प्रयत्न किया जीवन व परम्पराओं में विद्यमान रहते हुए भी एक सामान्य धर्म है जो व्यक्ति और समाज से निरपेक्ष है। हिन्दू धर्म अन्य धर्मो से अलग धर्म व मत में अंतर करता है। हिन्दू धर्म में भी अनेक मत है जैसे शंकराचार्य मत, रामानुज मत, अभिनवगुप्त मत आदि। इसी कारण हिन्दू धर्म के कई सम्प्रदाय हैं।

हिंदू धर्म के प्रमुख गुण है उदारता, सहिष्णुता व परोपकार जिससे हिन्दू धर्म का सदैव संरक्षण होता रहा है।

संसार से नफरत और हिंसा मिटाने का उपाय

आज पूरी दुनिया में अफरा तफरी मची हुई है, लोग धर्म के नाम पर एक दूसरे के दुश्मन बने हुए हैं। कुछ लोगों की नज़रों में इंसानी जीवन का कोई मूल्य नहीं है। पूरे विश्व में संशय और भय का माहौल है। अशांति और भय के इस माहौल में एक हिन्दू पथ ही है जो हमें सही रास्ता दिखा सकता है क्योंकि एक हिन्दू पथ ही जो हमें प्राणिमात्र से प्रेम करने की बात सिखाता है। एक दूसरे से नफरत और हिंसा की जगह प्रेम की राह दिखाता है।

ईश्वाश्योपनिषद के अनुसार जो मनुष्य हर प्राणी को परम ब्रह्म परमात्मा में देखता है और उसी तरह उस परम प्रभु को हर प्राणी में देखता है वो न किसी से घृणा कर सकता है ना ही किसी का अहित कर सकता है। वह तो हर जगह बस अपने प्रभु के दर्शन करता हुआ व उन्हें स्मरण करता हुआ मन ही मन उन्हें प्रणाम करता हुआ हर प्राणी से सिर्फ प्रेम ही कर सकता है। हिन्दू पथ कहता है जो व्यक्ति हर पल हर जगह सिर्फ परमात्मा को देखता है तो उसके मन में नफरत, घृणा, द्वेष, हिंसा, अहम्, अपना पराया जैसी किसी चीज़ के लिए कोई जगह ही नहीं बचती है। इस प्रकार जब मनुष्य परमात्मा को भली भांति पहचान लेता है, जब उसकी दृष्टि हर जगह भगवद दृष्टि हो जाती है, उसे हर प्राणी में एकमात्र परमात्मा के दर्शन होते हैं, जब वह हर प्राणी में एकमात्र परमात्मा को देखता है तब उस समय उसके मन में शोक, मोह, घृणा, हिंसा अदि अन्य विकार कैसे रह सकते है? वह तो बस प्रभु प्रेम के कारण प्राणी मात्र की सेवा में लगा रहता है वह किसी का अहित तो कदापि नहीं कर सकता क्योंकि उसके मन में, विचारों में सिर्फ परमात्मा के अलावा कुछ नहीं है। हिन्दू पथ के अनुसार यदि संसार का हर व्यक्ति हिन्दू धर्म की इन बातों को अपना ले तो संसार से अराजकता, हिंसा, नफरत, अपना-पराया, धर्म की लड़ाई, दंगे आदि सभी समाप्त हो जायेंगे व पूरे विश्व में सिर्फ प्रेम व शांति होगी और कुछ नहीं।

परमात्मा के प्रति आपकी आस्था होनी चाहिए

धर्म प्रेरणा बन सके , इसके लिए मनुष्य को कल्याणकारी सोच बनानी होगी।

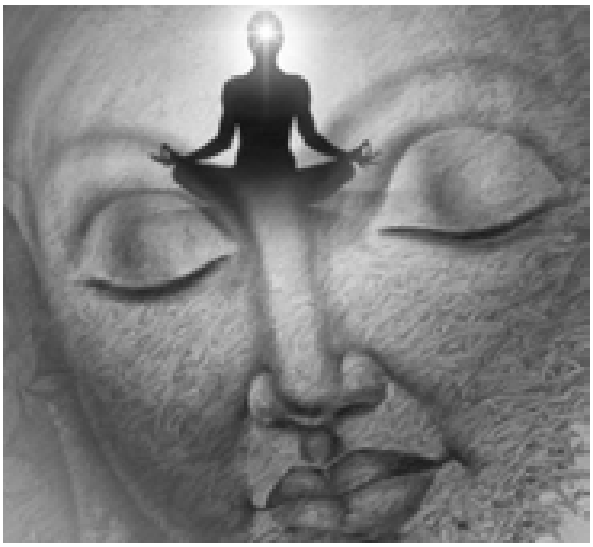

एक महिला रोज मंदिर जाती थी एक दिन उस महिला ने पुजारी से कहा अब मैं मंदिर नहीं आया करूंगी, इस पर पुजारी ने इसके पीछे कारण जानना चाहा। इसपर महिला बोली, मैं देखती हूं कि लोग मंदिर परिसर में अपने फोन से अपने व्यापार की बात करते हैं। कुछ ने तो मंदिर को ही गपशप का स्थान चुन रखा है। इतना ही नहीं महिला बोली, कुछ तो पूजा कम और पाखंड ज्यादा करते हैं।

इसपर पुजारी कुछ देर तक चुप रहे, फिर कहा आपका निर्णय एकदम सही है लेकिन अपना अंतिम निर्णय लेने से पहले आप मेरे कहने से कुछ कर सकती हैं। महिला ने बिना देर किए हां में सिर हिला दिया और पुजारी से बोली कि बताइए क्या करना है।

पुजारी ने महिला से कहा, आप एक गिलास में पानी से भरकर लीजिए और दो बार मंदिर परिसर के अंदर परिक्रमा लगाइए। हां लेकिन इसमें शर्त यह है कि गिलास का पानी जरा सा भी गिरना नहीं चाहिए। महिला ऐसा करने के लिए एकदम तैयार हो गई और फिर थोड़ी ही देर में उसने ऐसा कर दिखाया।

उसके बाद मंदिर के पुजारी ने महिला से तीन सवाल पूछे

1. क्या आपने किसी को फोन पर बात करते देखा ?

2. क्या आपने किसी को मंदिर में गपसप करते देखा?

3. क्या किसी को पाखंड करते देखा?

महिला बोली- नहीं महाराज, मैंने ऐसा कुछ भी नहीं देखा। इसके बाद पुजारी बोले कि जब आप परिक्रमा लगा रही थीं तो आपका पूरा ध्यान गिलास पर था कि इसमें से पानी न गिर जाए, जिसके चलते आपको न कुछ दिखाई दिया और न ही किसी की बातें सुनाई दीं।

पुजारी महिला से बोले कि आप जब भी मंदिर आएं तो सिर्फ अपना ध्यान परम पिता परमात्मा में ही लगाएं फिर आपको कुछ दिखाई ही नहीं देगा और न ही किसी की फालतू बातें सुनाई देगी। सिर्फ भगवान ही सर्ववृत दिखाई देगा। यह सुनकर महिला को सही प्रकार से पूजा करने का अर्थ समझ आ गया और उसने मंदिर न आने का निर्णय तत्काल बदल दिया।

अपने द्वारा दूसरों के प्रति किये गए उपकार को भूल जाना, कभी उस किए गए उपकार का प्रतिलाभ मिलने की उम्मीद मन में न रखना।

पूजा करते समय सिर ढकने के फायदे

आप जानते हैं कि पूजा करते समय सिर ढकने के पीछे क्या कारण है। वैसे तो हर धर्म के अपने अलग-अलग विचार होते हैं। लेकिन एक चीज सभी धर्मों में कॉमन है वो है सिर ढक कर पूजा करना। चाहे वो मंदिर हो या फिर मसजिद या फिर गुरूद्वारा। हर जगह आपको लोग ऐसे मिलेंगे जो सिर ढक कर पूजा करते हैं। तो आज हम अपने आर्टिकल के जरिये आपको बताएंगे इस बात का रहस्य।

जिसको आप आदर देते हैं उनके आगे हमेशा सिर ढक कर जाते हैं इसी कारण कई महिलाएं जब भी अपने सास-ससुर या बड़ों से मिलती हैं तो सिर ढक लेती हैं।

सिर के मध्य में सहस्रार चक्र होता है जिस पर पूजा करते वक्त निगेटिव चीजों का असर नहीं होना चाहिए इस कारण सिर ढक कर पूजा करनी चाहिए। ऐसा माना जाता है कि सिर ढकने से मन एकाग्र रहता है।

ईश्वर माता की तरह हमारी देखभाल करते हैं

मां की धारणा के साथ सृष्टि और विनाश, दोनों को एक साथ सोचा उनकी दूरगामी कल्पना बड़ी गहन और सत्य के निकट है।

जीव लोहा तो संत लकड़ी की भाँती है जाने कैसे !!

भौतिक शास्त्र के अनुसार यदि लोहा और लकड़ी दोनों को अलग अलग पानी में डुबोया जाय तो लोहा डूब जाता है पर लकड़ी नहीं डूबती। पर यदि लोहे को लकड़ी के सहारे से पानी में डूबोया जाय तब वह लोहा भी पानी में लकड़ी के सहारे तैरने लगता है।

इसी प्रकार हमारे जीवन में भी हम जीव लोहे की भाँती है और सदगुरु या संत लकड़ी की भाँती है और यह संसार एक भवसागर है। इस भवसागर को जब जीव अकेले अपने बूते पर पार करना चाहता है तब वह डूब जाता है। पर यदि वह किस संत या सदगुरु का आश्रय लेकर पार करता है तब वह सदगुरु उसे डूबने से बचा लेते हैं और अपनी कृपा और सदमार्ग का आश्रय देकर जीव को इस भव सागर से पार करा देते हैं।

अत: प्रत्येक जीव को चाहिए कि वह इस भवसागर से पार होने के लिए इसमें डूबने से बचने के लिए किसी सद्गुरु या संत का आश्रय अवश्य ले क्योंकि जीव माया जनित होता है। वह कितना भी यत्न कर ले इस संसार के चक्र में फंस कर उसे डूबना ही है पर समर्थ संत की संगती उसे इस चक्र से बचा कर भाव सागर पार करा देती है।

लेख

गुरू के सानिध्य में भक्त भात के समान नर्म बनता है

गुरू भी हमारे दुर्विकारों को दूर करते हैं और हमें हर प्रकार की कसौटी में कस कर देखते हैं

जिस प्रकार भात बनाने से पहले धान को पहले कूटा जाता है और धान की भूसी और चावल अलग अलग किया जाता है। फिर चावल को गर्म पानी में पकाया जाता है और जब तक वह पक न जाय पानी में उसे उबाला जाता है। चावल पका है या नहीं इसके लिए उसके दाने को दबा कर देखते है और यदि थोड़ी भी कठोरता उसमें रहे तो और पकाया जाता है। फिर जब एक निश्चित परिमाण में भात पक जाता है तब उसे सिद्ध मान लिया जाता है। जीव भी धान की भाँती होता है। जब जीव भगवान् के गुण रूप लीला धाम आदि की श्रवण मनन और चिंतन करता है तब धीरे धीरे उसके काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकार धान की भूसी की भाँती अलग हो जाता है। फिर जिस प्रकार चावल को गरम पानी के संपर्क में लाया जाता है उसी प्रकार जीव जब गुरू के सानिध्य में आता है तब जिस प्रकार गरम पानी चावल को पका देती है उसी प्रकार गुरू भी हमारे दुर्विकारों को दूर करते हैं और हमें हर प्रकार की कसौटी में कस कर देखते हैं कि हमारे मन में किसी प्रकार की कोई विकार शेष तो नहीं फिर जब हमारा मन उस भात की भाति कोमल हो जाता है तब जीव वास्तविक भक्त की श्रेणी में आता है और भगवान् की भक्ति और भगवद् आनंद प्राप्त कर पाता है।

दरवाजे पर सिंदूर लगाना शुभ होता है

हिन्दू देवियों की पूजा सिंदूर के बिना अधूरी है। आदि शक्ति की पूजा के लिए सिंदूर का इस्तेमाल किया जाता है।

कुछ चीज़ें महज़ रंगों का महत्व बताने के अलावा और भी बहुत कुछ कह जाती हैं। इन्हीं में से एक चीज़ है 'सिंदूर', जो केवल अपने लाल होने का संकेत नहीं देता, अपितु यह इससे जुड़े लोगों की भावनाओं को दर्शाता है। एक सिंदूर की सबसे अधिक अहमियत एक सुहागन के अलावा शायद ही कोई समझता हो। सामाजिक एवं धार्मिक उद्देश्यों के अलावा सिंदूर के कुछ शास्त्रीय महत्व भी मौजूद हैं। कुछ लोग तो सिंदूर के साथ-साथ तेल का इस्तेमाल भी करते हैं, अमूमन दीपावली के आसपास इन दोनों पदार्थों का मिश्रण कर खासतौर से घर के दरवाज़े पर धार्मिक चिन्ह बनाए जाते हैं।

दरअसल वास्तु शास्त्र के अनुसार दरवाजे पर सिंदूर और तेल लगाने से घर में नकारात्मक उर्जा का प्रवेश नहीं होता है। यह घर में मौजूद वास्तुदोष को भी दूर करने में कारगर माना जाता है। वास्तु विज्ञान के अंतर्गत आप इस उपाय को अनेक वास्तु दोषों को काटने का रामबाण इलाज कह सकते हैं। इसके अलावा ऐसी भी मान्यता है कि दरवाजे पर सिंदूर लगाने से देवी लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है। साथ ही यदि सरसों के तेल का भी उपयोग किया जाए तो यह शनि का प्रतिनिधि होने के लिहाज़ से घर-परिवार वालों की बुरी दृष्टि से रक्षा करता है।

लेख

दुर्जन व्यक्ति से सांप अच्छा

डी सी तंवर

दिक् काल आद्दान अवच्छिन्नानन्त चित् मात्र मूर्तये।
स्वानु भूत्यैकं आनाय नमः शान्ताय तेज से।।
भावार्थ
दसों दिशाओं व तीनों कालों में व्याप्त अवनिाशी, ज्ञानमय स्वरूप वाले अपरिमेय, आत्म अनुभव से जानने योग्य चैतन्य, शान्ति और तेज स्वरूप ब्रह्म को मेरा नामस्कार है।

दो प्रकार के प्राणी

इस संसान में दो प्रकार के प्राणी होते हैं। एक तो जिकी सोच सकारात्मक होती है तथा दूसरे व्यक्ति जिनकी सोच नकारात्मक होती है। नकारात्मक व्यक्ति ग्लास में आधे पानी को, आधा खाली ही कहेगा और सकारात्मक सोच वाला उसी ग्लास को आधा भरा कहेगा।

हमारे आसपास भी दो प्रकार के ही लोग होते हैं। एक तो अच्छे लोग और दूसरे बुराईयों से भरपूर बुरे लोग। सज्जन मानव से किसी को भी परेशानी नहीं होती है, जबकि दुर्जन लोगों के साथ रहने से हमेशा ही परेशानियां होती है। दुर्जन व्यक्ति और सांप दोनों ही जहरीले हैं, परन्तु दुर्जन व्यक्तियों की तुलना में सांप ज्यादा अच्छे हैं क्योंकि सांप मजबूरी में केवल एक ही बार डसता है और बुरे लोग हर पल डसने

की ही तलाश में रहते हैं। किसी ने क्या खूब कहा है-

आदमी में जहर इतना भर गया है,
कि विषधरों का वंश भी डर गया है।
कल कहोगे कि आदमी के काटने से,
सर्प कोई मर गया है।।

दुष्ट से बचकर रहना चाहिए

कीट युक्त, लार युक्त, दुर्गन्ध युक्त, घृणा के योग्य मांस और मनुष्य की हड्डी को पाकर कुत्ता इतने प्रेम से उसे चबाता है, कि उसे अपने समीप खुड़े हुए इन्द्र देवता की भी परवाह नहीं होती है। बिलकुल इसी प्राकर स्वार्थपरायण नीच प्राणी जिस पदार्थ को अपना लेता है, वह उसके अवगुणों पर कभी भी ध्यान नहीं देता एवं बुराइयां तथा बुरी वस्तु ही उसे अच्छी लगती है। किसी विद्वान ने कहा है-

केहरि के मूछन बसै, मस्तक बसै भुजंग।
बिच्छु के पूछन बसै, दुर्जन के सब अंग।।

भावार्थ

सिंह की मूंछों में, सर्प के मस्तक में और बिच्छू की पूंछ में विष होता है किन्तु दुर्जन एवं दुष्ट व्यक्ति के अंग-अंग में विष भरा होता है। अत: दुष्टों की संगत करने वाले को, विषैले सर्प आदि पालने की आवश्यकता नहीं है। आचार्य चाणक्य कहते हैं कि हमारे आसपास जो दुर्जन लोग हैं, वे सांपों से भी अधिक जहरीले और सदा ही हानिकारक सिद्ध होते हैं। हमें ऐसे कपटी और नीच लोगों से दूरी बनाए रखनी चाहिए क्योंकि इसमें ही हमारी और परिवार की भलाई है। सांप केवल तब ही हमला करता है, जब उसे अपने प्राणों पर संकट दिखाई देता है। इसके विपरीत जो भी लोग कपटी, नीच, अभिमानी और दुराचारी होते हैं, वे सदैव दूसरों को कष्ट पहुंचाने में ही आनन्दित होते हैं। इन लोगों की वजह से कई बार निर्दोष व्यक्ति भी परेशानियों में उलझ जाता है। कपटी व मक्कार इंसान हर पल समस्यों ही खड़ी करते रहते हैं इसी वजह से ऐसे लोग सांपों अथवा किसी भी जहरीले जानवरों से अधिक खतरनाक होते हैं और हमारी इनसे बचकर रहने में ही भलाई है।

भले बुरे की पहचान

स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महराज ने एक सत्संग में कहा था कि दुर्जन व्यक्ति चाहे कितना भी विद्वान क्यों ना हो, उसे उसी प्रकार त्याग देना चाहिए जिस प्रकार मणिधाारी विषधार को त्याग दिया जाता हैं विद्या मणि के समान है, और यदि यह किसी दुर्जन के पास है, तो वह विद्वान भी त्यागने योग्य है।

प्रवचन के दौरान उन्होंने (स्वामी सुदर्शनाचार्य) बताया था कि एक व्यक्ति किसी अनजान शहर में पहली बार आया और एक महानुभाव से कहा कि वह इस शहर में बसना चाहता है क्योंकि जहां से वह आया है वहां के लोग बहुत ही बुरे हैं और उन लोगों से सदा के लिए छुटकारा चाहता है। उस अनजान व्यक्ति ने जिससे भी प्रश्न किया था, उस महानुभाव ने कहा कि यहां के लोग तो बहुत ही बुरे हैं यह सुनकर वह व्यक्ति चला गया। उसके जाने के थोड़ी देर बाद एक और सज्जन आया और उसी (पहले) व्यक्ति से कहने लगा कि मुरैना (काल्पनिक नाम) से आया है..... क्रमश:

।। श्री गुरूहरिः ।।

वैकुंठवासी स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज की कृपा से स्थापित व प्रकाशित एवं अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज के नेतृत्व में प्रकाशित मासिक पत्रिका श्री सुदर्शन संदेश के प्रचार प्रसार के लिए प्रण लें। - संपादक

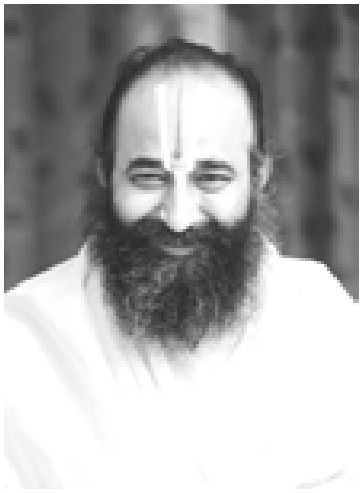

आपको क्या होगा लाभ!

पहले यह जान लें कि पत्रिका की सदस्यता एवं प्रचार प्रसार के मायने क्या हैं वास्तव में ''गुरुवचनों का प्रचार'' अर्थात् गुरू की ही सेवा है। गुरू महाराज के वचनों के अनुसार शास्त्र कहते हैं– जो शिष्य गुरु के वचनों का प्रचार प्रसार करता है, उनको अंगीकार करता है वास्तव में वह गुरू की सीधी कृपा का पात्र बनता है।

गुरू के वचनों को पढ़ने पढ़ाने से आपको अपने जीवन का सही अर्थ पता चलेगा। आपको निरंतर सत्संग मिलेगा। आपको सही और गलत में अंतर करने की बुद्धि मिलेगी। आप अपने धार्मिक कर्म, पर्व, त्यौहार, पित्रों को प्रसन्न करने, घर परिवार में कैसे रहें आदि आदि जानकारियों को समझ सकेंगे। इसके साथ ही आप गुरू वचनों को हृदय में धारण करेंगे।

आपसे प्रार्थना है कि श्री सुदर्शन संदेश पत्रिका के सदस्य बनें व बनाएं। श्री गुरू महाराज की कृपाओं को प्राप्त करें।

लेख

परमात्मा प्राप्ति के लिए भाषा एक ही है प्रेम की

जब तक हम इसको चरितार्थ नहीं करेंगे तब तक इसे सुनने से कोई लाभ नहीं होगा। इसको अंग्रेजी में प्रैक्टीकल कहते हैं।

मानव में प्रेम होना बहुत जरूरी ही है। प्रेम के बिना वह परमात्मा किसी भाषा को नहीं समझता। नारद जी ने परमात्मा से पूछा कि महाराज! मैं कौन से स्तोत्रों से आपका पठन करूं, आपका पूजन करूं, संस्कृत में बोलूं या कोई और भाषा बोलूं, वेद से आपका उच्चारण करूं, या वेदान्त से करूं, या श्रीभाष्य से करूं, या उपनिषदों के द्वारा करूं, किस तरह करूँ ? आपकी प्रसन्नता के लिए मैं सब कुछ कर सकता हूं।

भगवान् कहने लगे कि नारद! मैं तो अनपढ़ हूं। मैंने तो एक ही भाषा पढ़ी है, दूसरी जानता ही नहीं। नारद जी बोले, भगवान जी! आप अणु-अणु, कण-कण में समाये हुए हो, फिर कहते हो कि एक ही भाषा जानते हो। मनुष्य तो छः-छः भाषा पढ़ लेता है, और आप कहते हैं कि आपने एक ही भाषा पढ़ी है। भगवान् बोले कि हां-हां नारद! मुझे एक ही भाषा आती है। नारद बोले, कौन सी भाषा पढ़ी है महाराज? भगवान् बोले–प्रेम की।

बिना प्रेम के वेद का उच्चारण कर लो, मैं नहीं जानता, मैं नहीं समझता। मैं समझता हूं मेंढक बोल रहा है। बिना प्रेम के वेदान्त, श्रीभाष्य, अनेकानेक भाषाओं में स्तोत्रों का पाठ करो, मैं सुनता ही नहीं, मैं जानता ही नहीं, मैं तो केवल प्रेम की भाषा जानता हूं।

रामहि केवल प्रेम पिआरा
जान लेहु सो जाननहारा।।

जिस मनुष्य ने यह जान लिया है, या जानने लायक है या जानने का प्रयास कर रहा है, वह मेरा प्रिय है।

बाबा कहते हैं

इस संसार में भेजने वाले सच्चिदानंद

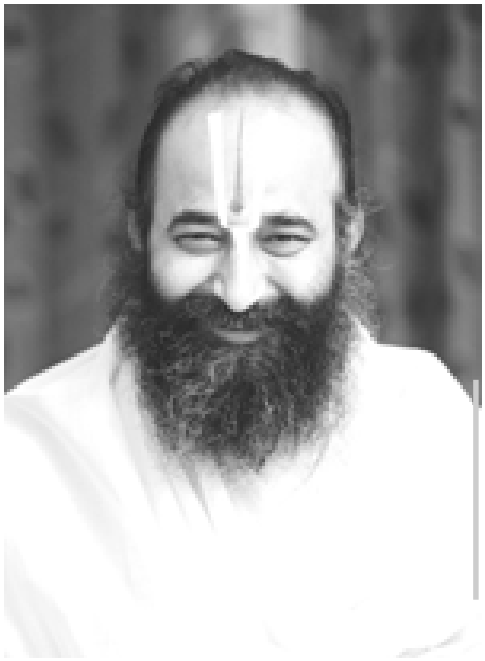

श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज, *पीठाधिपति-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम*

हमें इस संसार में भेजने वाले का नाम अधिपति है, सच्चिदानंद है, राजा है, वह निर्विकार पिता परमेश्वर है। मानव जीवन प्रदान करने वाला परमेश्वर बहुत ही दयालू है। लेकिन ऐसे कृपालू भगवान को भूलकर जब हम केवल अपने शरीर और उससे जुड़े प्रपंचों को सबकुछ मानने लगते हैं तभी हमारे अंदर दुर्गुणों का वास होने लगता है। हमें अपने शरीर पर अभिमान हो जाता है। हम भगवान के दिये चोले (शरीर) को अपना समझ लेते हैं, स्वयं को चोला ही समझ लेते हैं और सारे काम उस चोले के लिये ही करने लगते हैं तब वास्तव में हम अपने रास्ते से भटक जाते हैं और अपने पिता द्वारा जीवन जीने के मुख्य उद्देश्य को भूल जाते हैं। तब हमारा यह जीवन विनाश की राह पर चलने लगता है।

भगवान ने हमें दो चीजों से बनाया है। एक शरीर और दूसरी आत्मा। इसे ही भगवान श्री कृष्ण ने गीता में क्षर और अक्षर कहा है। क्षर यानि जिसका नाश होना निश्चित है, जो जड़ है और अक्षर यानि जिसका नाश नहीं हो सके, जो चेतन है।

शरीर यानि जड़ जिसकी कोई न कोई समय सीमा है, जिसको कभी ना कभी बदलना ही है; बिल्कुल वैसे ही जैसे पुराने कपड़ों को बदल दिया जाता है। तो इससे कैसा मोह। हमें

शरीर मिला है संसारी क्रियाओं को पूर्ण करने के लिये, सद्कर्म करने के लिये। इसका प्रयोग केवल और केवल सद्कर्म करने के लिये ही करना चाहिये।

दूसरी चीज दी हमें चेतन। जो उस भगवान का ही अंश है। वह है सत्+चित्+आनन्द यानि सच्चिदानंद। हम उसके ही अंश हैं।

कहा भी गया है कि

'ईश्वर अंश जीव अविनाशी।'

हम उस अविनाशी भगवान के ही अंश हैं उसके ही रूप हैं। तो हमें कार्य भी उसी के बताये और दिखाये करने चाहिए। उसके लिये ही करने चाहिए।

एक बात अच्छी तरह समझ जानी चाहिए कि शरीर हमारा है ही नहीं। यदि उसमें मन लगाओगे तो चेतन स्वरूप के यानि आत्मा के दर्शन नहीं हो सकते, उसको प्राप्त नहीं कर सकते। लेकिन यदि आत्मा को प्राप्त करने के लिए कार्य करोगे, उसमें मन लगाओगे तो शरीर से भी सुख प्राप्त करोगे। यूं ही भटकने से केवल और केवल अशांति ही मिल पायेगी। और भगवान के श्री चरणों में अपने चेतन स्वरूप को लगाने से परम शांति की प्राप्ति होगी ही। यह शर्तिया बात है।

हम आत्मा हैं, चेतन हैं और भगवान का ही स्वरूप हैं और हमें उसी में मिल जाना है ऐसी धारणा बनाकर मन बुद्धि से कर्म करेंगे तो भगवान के स्वरूप के दर्शन अवश्य होंगे।

मैं चेतन स्वरूप हूं और शरीर मेरा नहीं है। मैं शरीर नहीं हूं, जिस क्षण ऐसा मान लिया उसी क्षण आपके चेतन स्वरूप का उदय होना शुरू हो जायेगा। आप बिल्कुल उसी प्रकार हो जायेंगे जैसे छाछ और मलाई अलग-अलग हो जाते हैं। छाछ रूपी शरीर अलग और मलाई रूपी आत्मा अलग हो जायेगी। इस प्रकार मलाई को प्राप्त करने का उद्देश्य भी मिल जाएगा और छाछ रूपी शरीर का स्वरूप भी हमारे सामने आ जायेगा। यह पता चल जायेगा कि छाछ की कीमत क्या है और मलाई की कीमत क्या है।

भगवान श्री कृष्ण ने गीता में अपने उपदेश में एकदम स्पष्ट कह दिया कि जो जन्मता और मरता है, जो जवान और बूढा आदि स्तर को प्राप्त करता है, वह शरीर है तुम नहीं हो। जब तुम शरीर हो ही नहीं तो उसका शोक क्या करना और उसकी खुशी क्या मनानी। खुशी तो इस बात की मनानी है कि भगवान ने हमें उत्तम कार्य करने के लिय मानव जीवन दिया। जिसके द्वारा हम अधिक से अधिक मानवता की सेवा करें, मानवजन्य कार्य करें। उस भगवान की सत्ता का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करें, धर्म की स्थापना करें। अधर्म का नाश करें।

दिन और रात, सुबह और शाम हर चीज के दो पहलू हैं उसी प्रकार मानव और दानव दो पहलू हैं। एक बात स्पष्ट समझ लें कि जो अच्छे कर्म करे वह मानव है, भगवान प्रिय है और जो अधर्म करे, अकर्म करे वह दानव है और भगवान को भी वह असहनीय है। लेकिन दानव वह क्यों है, केवल कर्मों द्वारा। भगवान ने उसे दानव नहीं बनाया बल्कि वह स्वयं दानव बन गया अपने अधर्मी कार्यों के द्वारा।

रावण क्या था। ब्राह्मण कुल में जन्म लेने वाला परम विद्वान परम शक्तिशाली शासक। लेकिन किया क्या उसने। अधर्म किया, अकर्म किया, अत्याचार किये, प्राणियों पर कहर ढ़ाया, अहंकार किया। वह काम, क्रोध, मद में इतना खो गया कि अपने जन्म के प्रयोजन को भी भूल गया। दानवी प्रवृति को अपनाकर दानव बन गया। क्या अन्त हुआ उसका। असमय मारा गया। अपने सामने ही अपने बन्धुओं परिजनों, पुत्रों की मौत को देखते हुए उसने अपने प्राण गंवाये।

दूसरी तरफ उसी का भ्राता विभीषण जिसने मानवता को अपनाया, भगवान के नाम का सहारा लिया। भगवान के लिये काम किया, वह मानव बना रहा और भगवान ने उसे भक्ति के साथ-साथ सब सुख ऐश्वर्य प्रदान किये। यह है मानवता का एक उदाहरण। उसने शरीर के लिये काम नहीं किया, भगवान के लिये किया

और भक्ति करते हुए सच्चाई का साथ दिया। हमारे चेतन स्वरूप यानि की आत्मा के लिये भगवान श्री कृष्ण स्पष्ट कह रहे हैं कि-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि
नैनं दहति पावकः। (गीता 2/23-24)

तुम आत्मा हो, शरीर नहीं। आत्मा को कोई शस्त्रादि काट नहीं सकता, मार नहीं सकता और अग्नि उसे जला नहीं सकती।

जब हम यह हैं तो दुख क्लेश वाले जड़ स्वरूप शरीर में क्यों मन रमाते हैं। शरीर तो क्षण भंगुर है इसे किसी भी क्षण काटा जा सकता है, नष्ट किया जा सकता है। फिर क्यों इसके लिये कार्य करें, क्यों दुख दें स्वयं को भी और भगवान को भी।

भगवान ने कहा आत्मा कभी जन्मती नहीं, वह जवान और बूढी नहीं होती, उसका स्वरूप नहीं बदलता। जबकि शरीर जन्म लेता है, जवान और बूढ़ा होता है। अनेकानेक रोगों से ग्रसित होता है। तो बड़ा कौन हुआ- दुखों से घिरा शरीर या भगवान का स्वरूप आत्मा।

शरीर के विकास या विनाश की किसी भी प्रक्रिया से आत्मा पर कोई अन्तर नहीं पड़ता। आपकी बीमारी से आत्मा पर कोई फर्क नहीं पड़ता। जब वह हर तरह से शरीर से श्रेष्ठ है, बढ़कर है तब क्यों शरीर को अधिक महत्व दिया जाय।

मानव के लिये सबसे पहली यह आवश्यकता है कि वह शरीर को नहीं आत्मा को ही सबकुछ माने और सदा भगवान की भक्ति में लीन रहे उसके नाम का स्मरण करते, भजन करते हुए जीवन यापन करे।

याद रखें कि मृत्यु शरीर की होती है, वह ही जलाया जाता है। हमारी ना तो मृत्यु होती है और ना ही हमें जलाया जाता है। अनेकानेक योनियों में विचरण करते हुए हम मोक्ष प्राप्ति के लिये कार्य करते हैं जबकि शरीर कोई कार्य नहीं करता, वह बनता और बिगड़ता है। वह चोला है, जिसे हम पहनते और उतारते रहते हैं।

भगवान ने आत्मा को 'सर्वमतः (2/24) कहा है। सर्वव्यापी कहा है। तो एक तरफ तो शरीर है जिसका नष्ट होना निश्चित है और दूसरी तरफ आत्मा है जो न जन्मती है और न मरती है। वह अजर, अमर, अविनाशी भगवान का ही अंश है।

यह दोनों अलग-अलग प्रकृति के दो अलग प्रकार हैं भगवान की रचना के। हमारा शरीर पंचभौतिक तत्वों से बना है जिसने मां के गर्भ से जन्म लिया है। यहीं पृथ्वीलोक पर जन्मा, विचरण किया और अन्त में यहीं मिट्टी में मिल गया। उसके पांचों तत्व अलग-अलग हो गये। जल, वायु, नभ, धरती और अग्नि ने मिलकर एक रूप लिया और बन गया शरीर। एग्रीमेंट समाप्त हुआ और हो गये अलग। लेकिन आत्मा के साथ ऐसा नहीं है।

आत्मा भगवान का अंश है उसने इस शरीर को धारण किया, लीला की और अंत में भगवान की शरण में पहुंच गई। इतना स्पष्ट अंतर दोनों में है।

लेकिन मानव यह करता है कि शरीर के साथ संबंध बनाता है आत्मा के साथ नहीं। कुछ आध्यात्मिक चाहने वाले भी शरीर के साथ संबंध बनाते हैं उसके द्वारा भगवान की प्राप्ति करना चाहते हैं। लेकिन कौन करेगा ऐसा? वो ही करेगा जिसके पास योग्य मार्गदर्शक नहीं होगा- गुरु नहीं होगा।

यह समझ लेना चाहिए कि बेशक आकृति को देखकर भाव पैदा हो जाना आसान हो लेकिन भाव पहले हैं आकृति बाद में। यदि भाव ही नहीं होगा तो कितनी ही सुंदर आकृतियां क्यों ना ला दी जाएं भक्ति होगी ही नहीं, समर्पण होगा ही नहीं।

जबकि भाव होगा तो समर्पण एक शालिग्राम में भी आ जायेगा। जो एक चिकनी शिला ही मात्र तो है। लेकिन भाव के आते ही भगवान का स्वरूप बन जाती है। इसीलिये हमारी दृष्टि सबसे पहले आत्मा की तरफ जानी चाहिए ना कि शरीर की तरफ। शरीर की तरफ इसलिए भी नहीं क्योंकि शरीर वास्तव में दुःखों की खान है। यह दुखों का स्थान है। अनेकानेक तकलीफों को झेलते हुए यह शरीर अन्त में नष्ट हो जाता है।

लेख

ईश्वर हमें हमारी प्रार्थना का जवाब देते हैं

ईश्वर से अपनी प्रार्थना का उत्तर पाने के लिए आपको कर्मठ, सचेष्ट और लगनशील होना चाहिए।

ईश्वर से की गई प्रार्थना का तभी उत्तर मिलता है जब हम अपनी शक्तियों को काम में लाएं। आलस्य, प्रमाद, अकर्मण्यता और अज्ञान यह सब गुण यदि मिल जाएं तो मनुष्य की दशा ऐसी हो जाती है जैसे कि किसी कागज के थैले के अन्दर तेजाब भर दिया जाए। ऐसा थैला अधिक समय तक नहीं ठहर सकेगा और बहुत जल्द गल कर नष्ट हो जाएगा।

ईश्वरीय नियम, बुद्धिमान माली के सदृश है, वह बेकार घास, कूड़े को उखाड़कर फेंक देता है और योग्य पौधों की भरपूर साज-संभाल रखकर उन्हें उन्नत बनाता है। जिस खेत में बेकार खरपतवार उग आते हैं उसमें अन्न की फसल मारी जाती है। भला ऐसे किसान की कौन प्रशंसा करेगा, जो अपने खेत की ऐसी दुर्दशा कराता है।

निश्चय ही ईश्वरीय नियम बेकार के पदार्थों की गन्दगी हटाते रहते हैं, ताकि सृष्टि का सौंदर्य नष्ट न होने पाए। यह कहावत बिलकुल सच है कि—ईश्वर उसकी मदद करता है जो खुद अपनी मदद करता है, अपने पैरों पर खड़ा होने वाले की पीठ थपथपाने वाले दूसरे लोग भी मिल जाते हैं। इसलिए ईश्वर से अपनी प्रार्थना का उत्तर पाने के लिए आपको कर्णठ, सचेष्ट और लगनशील होना चाहिए।

लेख

मैं और मेरा छोड़कर हमारा अपनाना होगा

नदियाँ जब तक समुद्र में नहीं मिल जातीं अस्थिर और बेचैन रहती है।

ईश्वर उपासना मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है। नदियाँ जब तक समुद्र में नहीं मिल जातीं अस्थिर और बेचैन रहती है। मनुष्य की असीमता भी अपने आपको मनुष्य मान लेने की भावना से ढकी हुई है। उपासना विकास की प्रक्रिया है। संकुचित को सीमा रहित करना, स्वार्थ को छोड़कर परमार्थ की ओर अग्रसर होना, ''मैं'' और मेरा छुड़ाकर 'हम' और 'हमारे' की आदत डालना ही मनुष्य के आत्म-तत्व की ओर विकास की परम्परा है। यही तभी सम्भव है जब सर्वशक्तिमान परमात्मा को स्वीकार कर लें, उसकी शरणागति की प्राप्ति हो जाय। मनुष्य रहते हुए मानवता की सीमा को भेदकर उसे देवस्वरूप में विकसित कर देना ईश्वर की शक्ति का कार्य है। उपासना का अर्थ परमात्मा से उस शक्ति को प्राप्त करना ही है। अहंकार का जाल, मन, शरीर, जीवन, भाव, इच्छा, विचार, सुख और दु:ख के संघर्ष, पाप, पुण्य, अपना पराया आदि के जटिल प्रपंच मनुष्य में स्थित एक उच्चतर आध्यात्मिक शक्ति के ब्रह्म और अपूर्ण रूपमात्र हैं। महत्ता इसी शक्ति की है, मनुष्य की नहीं, जो प्रच्छन्न रूप से आत्मा में अधिगत है।'' भगवान् भक्त की भावनाओं का फल तो देते हैं किन्तु उनका विधान सभी संसार के लिये एक जैसा ही है।

लेख

गर्मी से राहत दिलाए मस्त दही लस्सी

दही में कैल्शियम जो दांतों एवं नाखूनों की मजबूती एवं मांसपेशियों के सही ढंग से काम करने में भी सहायक है।

आयुर्वेद के मुताबिक गर्मियों में दूध के मुकाबले दही खाने के फायदे बहुत अधिक होते हैं। दूध में मिलने वाला फैट और चिकनाई शरीर को एक उम्र के बाद नुकसान पहुंचाता है। इस के मुकाबले दही से मिलने वाला फास्फोरस और विटामिन डी शरीर के लाभकारी होता है। दही में कैल्सियम को एसिड के रूप में समा लेने की भी खूबी होती है। इसमें कुछ ऐसे रासायनिक पदार्थ होते हैं, जिसके कारण यह दूध की अपेक्षा जल्दी पच जाता है। जिन लोगों को पेट की परेशानियां जैसे- अपच, कब्ज, गैस बीमारियां घेरे रहती हैं, उनके लिए दही या उससे बनी लस्सी, मट्ठा, छाछ का उपयोग करने से आंतों की गरमी दूर हो जाती है। पाचन अच्छी तरह से होने लगता है और भूख खुलकर लगती है। दही के नियमित सेवन से आंतों के रोग और पेट की बीमारियां नहीं होती हैं तथा कई प्रकार के विटामिन बनने लगते हैं। दही में जो बैक्टीरिया होते हैं, वे लेक्टेज बैक्टीरिया उत्पन्न करते हैं। दही में हृदय रोग, हाई ब्लड प्रेशर और गुर्दों की बीमारियों को रोकने की अद्भुत क्षमता है। यह हमारे रक्त में बनने वाले कोलेस्ट्रोल नामक घातक पदार्थ को बढ़ने से रोकता है, जिससे वह नसों में जमकर ब्लड सर्कुलेशन को प्रभावित न करे और हार्टबीट सही बनी रहे।

मंत्रोपदेश करना सरल नहीं

वैकुंठवासी जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

आप लोग मुझे नारायणावतार कहते हैं, नारायण भगवान् की जय कहते हैं। वैसे मैं खुश भी होता हूं कि इस हाड़-मांस मलमूत्र के शरीर के बहाने कम से कम नारायण का नाम तो सबकी जिह्वा पर आ रहा है। मैं इसी में खुशी मानता हूं। अजामिल के बेटे का नाम नारायण था। उसे अपने बेटे से प्यार था, भगवान से नहीं। मरते समय आदमी अपनी प्यारी वस्तु को पुकारता है या याद करता है। मृत्युकाल में जब यमराज के दूत उसको नजर आने लगे तो उसने अपने बेटे को पुकारा, नारायण! नारायण! नारायण! नारायण! नारायण! कहते कहते प्राणान्त हो गया।

भगवान् श्रीहरि नारायण के पार्षदों और यमराज के दूतों में झगड़ा हो गया, आपस में युद्ध हुआ। पार्षदों ने यमराज के दूतों को परास्त कर दिया। भगवान् नारायण के पास ले गये। मीटिंग बैठ गई यमराज की, धर्मराज की और भगवान् जी की। यमराज बोले, हमारे साथ अन्याय हुआ है, इस्तीफा ले लो, मुझे नौकरी नहीं करनी। मैं ऐसी नौकरी क्यूं करूंगा? एक तो मेरे नाम से ही दुनिया

घबराती है। यमलोक में आने से लोग घबराते हैं, रोते हैं, चीखते हैं, चिल्लाते हैं; इसमें मैं पड़ा हुआ हूं, काम कर रहा हूं। मैं इतनी बुरी नौकरी क्यूं करूंगा। इस्तीफा पकड़ लो, क्योंकि तुम्हारे पार्षदों ने हमारे नौकरों को, दूतों को पीटा है और एक अन्यायी को यहां ले आये। सभा में प्रश्न रख दिया। प्रश्नोत्तर होने लगे। तर्क वितर्क हुए। निर्णय यह हुआ कि मृत्युकाल में यदि परमात्मा का नाम व्यक्ति की जिह्वा से निकल जाये, गलती से भी, या पुत्र के मोह में, परिवार के मोह में, जिसमें भी निकल जाये, उसको यमदूत हाथ नहीं लगायेंगे।

जम कंकड़ नेड़ न आवहिं,
जब रसना हरि गुण गाव जी।

भगवान् नारायण बोले, अजामिल ने अन्त में मेरा नाम पुकारा है। यमराज बोले, वह तो इसके बेटे का नाम था। भगवान् बोले कि यह मुझे पता नहीं और भी कोई मेरे नाम का हो सकता है पर मैंने तो अपने नाम को ही सुना है। कितनी विचित्र घटना है, देखिये आप! कितना विचित्र खेल है उस परमात्मा का!

मेरा भाव यही है कि मैं तो ढिंढोरची हूं, ढिंढोरा पीट रहा हूं कि भूल-चूक में भी तुम उसका स्मरण करते रहो, स्मरण करना मत भूलो। भगवान् श्रीकृष्ण जी अर्जुन को यही उपदेश करते हैं कि हे अर्जुन! तू कर्म से दूर मत हो, करता रह-

मामनुस्मर युद्ध च

युद्ध को मत छोड़ और मेरा स्मरण करना भी मत छोड़। मेरे इस संदेश को यदि आप स्वीकार कर लेंगे तो मेरा अपना मानना है कि यमराज के दर्शन नहीं होंगे। यमराज तुम्हारे चरणों को धोकर पियेगा। वह तुम्हारी आरती उतारेगा और यमराज तुम्हारा अंगभक्षक नहीं, अंगरक्षक बनकर उस दिव्य लोक, गिरिजा का मार्ग दिखायेगा और साथ में तुम्हारा स्वागत करेगा।

किसी कमाई को रखकर हम भूल गये तो क्या वह अच्छी बात है। अच्छी बात तो यह है कि कमाई करने के बाद, उसको सम्भालते रहें। कहीं चोर तो नहीं ले गये, लुटेरों ने कहीं लूट तो नहीं लिया, कहीं डाका तो नहीं पड़ गया। अगर भूल गये, तो भूल ही गये, फिर क्या रखा है। इसलिए इस मानव शरीर की स्मृति रखना जरूरी है। यह संदेश देने के लिये ही यह दास जगह-जगह ढिंढोरा पीटता रहता है हारमोनियम पर, तबले पर, गला फाड़-फाड़ कर के, हर तरह से, जैसे भी, नाच करके, गा करके, ढिंढोरा पीटता है।

किसी तरह तो मेरी बात को समझें। और अगर कोई नहीं मानता तो मैं नाच भी करता हूं। यह ढिंढोरची अपना ढिंढोरा पीटने के लिये जगह-जगह पर आम सभा, नुक्कड़ सभा, अनन्य सभा रखता है। इस ढिंढोरे को आप लोग याद रखें और ढिंढोरा यही है कि मानव का कर्तव्य शुभ कर्म करना है और परमात्मा श्रीमन् हरिनारायण का स्मरण, श्रीमन् नारायण नारायण करना है। इसको मत भूलो। इसको भूलने से गुजारा नहीं होगा।

स्तंभ

जून माह के पर्व

जून माह

02 जून (शुक्रवार) – मासिक दुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती

03 जून (शनिवार) – महेश नवमी, गंगा दशहरा

05 जून (सोमवार) – गायत्री जयन्ती, निर्जला एकादशी, रामलक्ष्मण द्वादशी

06 जून (मंगलवार) – प्रदोष व्रत

07 जून (बुधवार) – वैकासी विसाकम

08 जून (बृहस्पतिवार) – वट पूर्णिमा व्रत

09 जून (शुक्रवार) – ज्येष्ठ पूर्णिमा, पूर्णिमा उपवास, कबीरदास जयन्ती

10 जून (शनिवार) – आषाढ़ प्रारम्भ उत्तर

13 जून (मंगलवार) – संकष्टी चतुर्थी

15 जून (बृहस्पतिवार) – मिथुन संक्रान्ति

17 जून (शनिवार) – कालाष्टमी

20 जून (मंगलवार) – योगिनी एकादशी

21 जून (बुधवार) – प्रदोष व्रत, साल का सबसे बड़ा दिन

22 जून (बृहस्पतिवार) – मासिक शिवरात्रि

23 जून (शुक्रवार) – दर्श अमावस्या, जमात उल-विदा, रोहिणी व्रत

24 जून (शनिवार) – आषाढ़ अमावस्या, गुप्त नवरात्रि प्रारम्भ

25 जून (रविवार) – चन्द्र दर्शन, जगन्नाथ रथयात्रा

27 जून (मंगलवार) – विनायक चतुर्थी

28 जून (बुधवार) – स्कन्द षष्ठी

30 जून (शुक्रवार) – अष्टाह्निका विधान प्रारम्भ

॥ श्री गुरूहरिः ॥

श्री सिद्धदाता आश्रम

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

प्रांगण में जनहित सेवा चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

नि:शुल्क विशाल चिकित्सा शिविर

प्रत्येक रविवार प्रातः नौ बजे से

उच्च प्रशिक्षित चिकित्सा विशेषज्ञों एवं उनके सहयोगियों द्वारा आयुर्वेद, अंग्रेजी, होम्योपेथी व प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से रोगियों को बेहतर और निशुल्क चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध हो रही हैं।

वैकुंठवासी गुरू महाराज की कृपा एवं अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज के आशीर्वाद से शिविर अपनी उपयोगिता स्वयं सिद्ध कर रहे हैं। अब तक लाखों जरूरतमंद इसका लाभ उठा चुके हैं और सैकड़ों मरीज प्रतिदिन अपना इलाज कराकर लाभांवित हो रहे हैं।

श्री सिद्धदाता आश्रम में ब्रह्मोत्सव

श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में ब्रह्मोत्सव आयोजन में लाखों श्रद्धालुओं ने भागीदारी की। इस दौरान विशिष्ट पूजा अर्चना सहित अनेक प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों, प्रवचनों, शोभायात्राओं, भंडारों आदि का आयोजन किया गया। परम पूज्य गुरूदेव श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज ने बताया कि ब्रह्मोत्सव वास्तव में भगवान के उत्सव विग्रहों में पुनः प्राण प्रतिष्ठा जैसा कार्यक्रम होता है। इसे हम सामान्य भाषा में भगवान की नजर उतारना भी कह सकते हैं। उन्होंने बताया कि हम साधारण लोगों की छवियों को नजर लग सकती है तो भगवान को प्रेम के सागर हैं, आनंद के दाता हैं। उनको भी भक्तों की नजर लगती है जो ब्रह्मोत्सव आयोजन द्वारा दूर हो जाती है।

1

2

3

4

5

6

7

Postal Regd. No. DL (E)-20/5031/16-18
Regd. under RNI No. DEL HIN/2003/11728
posted on 14 & 15 of every month

बाबा की छवियां

1

हरियाणा के केबिनेट मंत्री श्री विपुल गोयल जी को श्री गुरू महाराज ने आशीर्वाद लेते दिया। 2–भाजपा विधायक श्री मूलचंद शर्मा जी एवं कांग्रेस विधायक श्री ललित नागर जी गुरू जी से आशीर्वाद लेते हुए, 3–भाजपा नेता श्री किशन ठाकुर जी बाबा के चरणों में पहुंचे, 4–संतों एवं छात्रों को वस्त्र आदि प्रदान करते श्री गुरू महाराज, 5–सेवादारों को आशीर्वाद प्रदानकरते श्री गुरू महाराज 6–7–श्री गुरू महाराज जी की कृपा से फरीदाबाद के स्लम क्षेत्र में सफाई अभियान चलाते आश्रम के सेवादार। संत नगर में आश्रम की ओर से रोज सफाई की जाएगी।

2

3

4

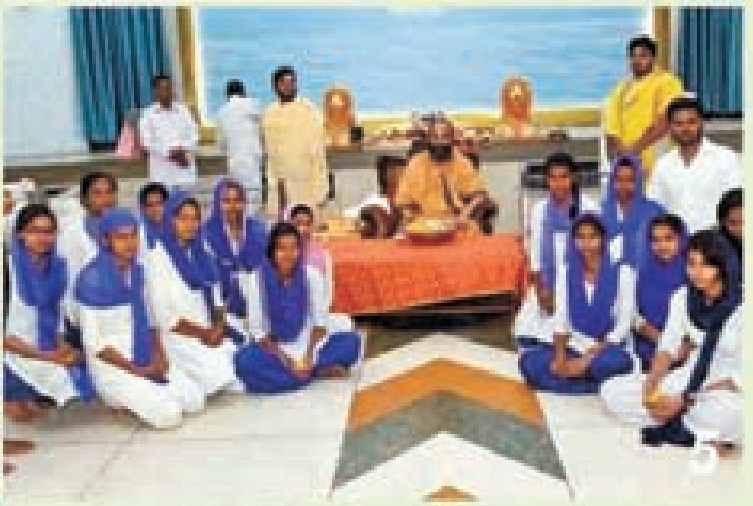

5

6

7

जनहित मानव कल्याण केंद्र के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रहलाद शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794–795, गुरु रामदास नगर एक्सटेंशन, लक्ष्मीनगर, दिल्ली–110092 से मुद्रित व ई–3 मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली–110091 से प्रकाशित। संपादक–शकुन रघुवंशी अवैतनिक